# तेवरी-पक्ष -८

( जनजागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी )

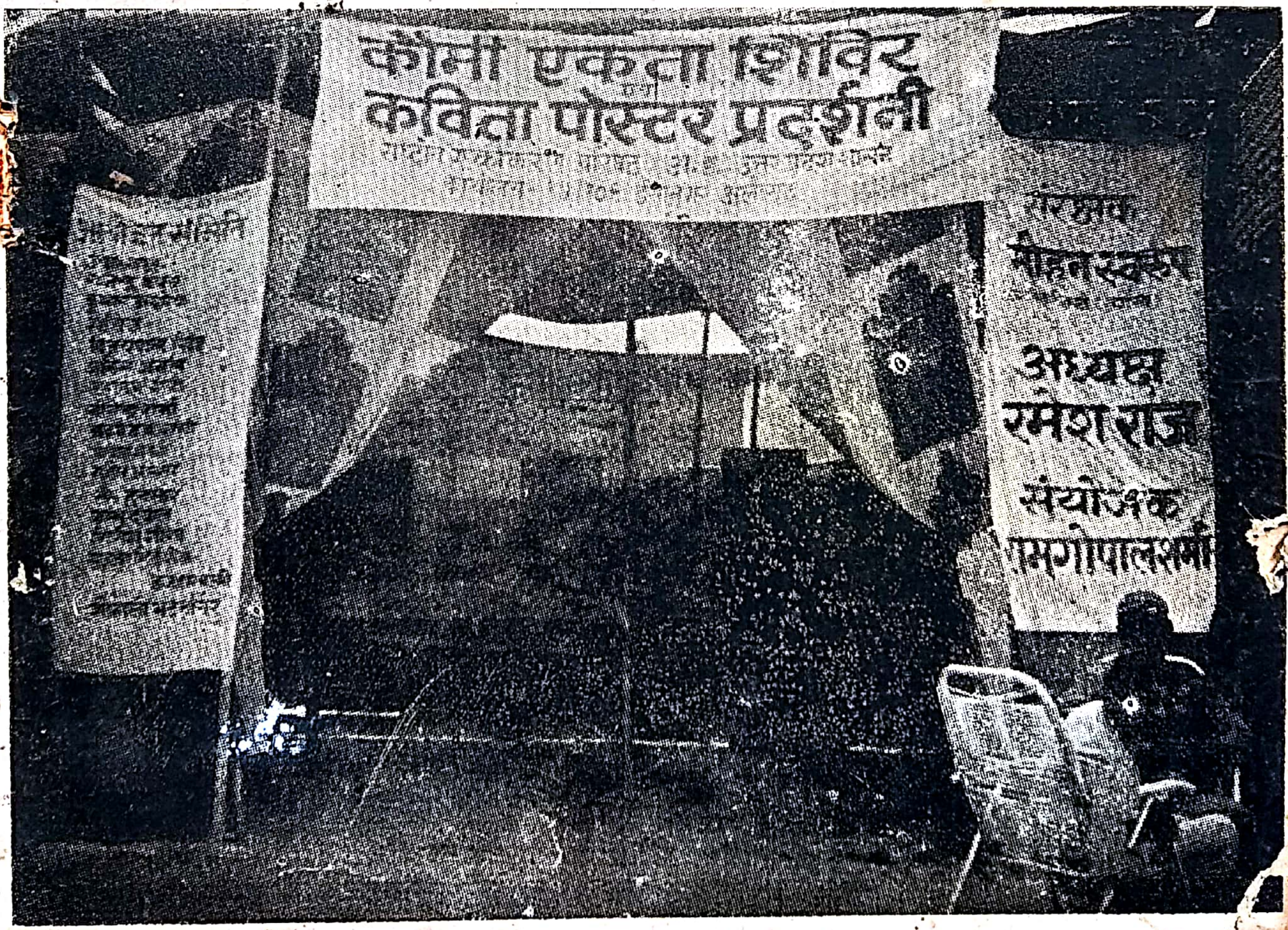


Scanned by CamScanner

# तेवरी-पक्ष

( जन-जागरण की विचार प्रधान त्रैमासिकी )

वर्ष–तीन अंक–दो अप्रैल, मई, जून–१९८

संरक्षक – श्री रामचरन गुप्त

सम्पादक – रमेशराज

सह-सम्पादक–

योगेन्द्र शर्मा

विजयपाल सिंह

रामगोपाल शर्मा 'गोपेश'

परामर्श – अनिलकुमार 'अनल' (अधिवक्ता)

मूल्य–एक प्रति-तीन रुपया

वार्षिक–दस रुपया

सम्पादन/संचालन–अवैतनिक

पत्रिका परिवार

सर्व श्री श्याम बेबस

दर्शन बेजार

कुमार अशोक

भंवरपाल सिंह

हरद्वारीलाल वशिष्ठ

गजेन्द्र बेबस

वीरेन्द्रकुमार सिंह

अलका गौरव

जगमोहन जगेश

सम्पर्क –सार्थक-सृजन प्रकाशन

१५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़

––समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र अलीगढ़ होगा।

Scanned by CamScanner

जिलाधिकारी निवास
अलीगढ़

दिनांक……अप्रैल……१९८७

# सन्देश

मुझे यह जानकर अपार हर्ष हुआ है कि तेवरीपक्ष द्वारा अलीगढ़ औदयोगिक एवं कृषि प्रदर्शनी में कौमी एकता के महत्वपूर्ण विषय पर लगाये गये कविता पोस्टर प्रदर्शनी के शिविर पर एक विशेषांक निकाला जा रहा है। मैंने स्वयं भी इस कविता पोस्टर प्रदर्शनी शिविर का अवलोकन किया था। कौमी एकता जैसे राष्ट्र हित एवं जनहित के महत्वपूर्ण विषय पर राष्ट्रीय एकीकरण परिषद का यह एक सराहनीय प्रयास था, जिसके लिए राष्ट्रीय एकीकरण परिषद के पदाधिकारी तथा इस शिविर के समस्त आयोजक बधाई के पात्र हैं।

मुझे आशा है कि राष्ट्रीय एकीकरण परिषद इसी प्रकार निःस्वार्थ भाव से राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने के लिए आगे भी अपना अनवरत प्रयास जारी रखेगी। कौमी एकता पर आयोजित कविता पोस्टर प्रदर्शनी विशेषांक निकालने के लिए तेवरीपक्ष को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

। ललित श्रीवास्तव।
आई० ए० एस०
जिलाधिकारी, अलीगढ़।

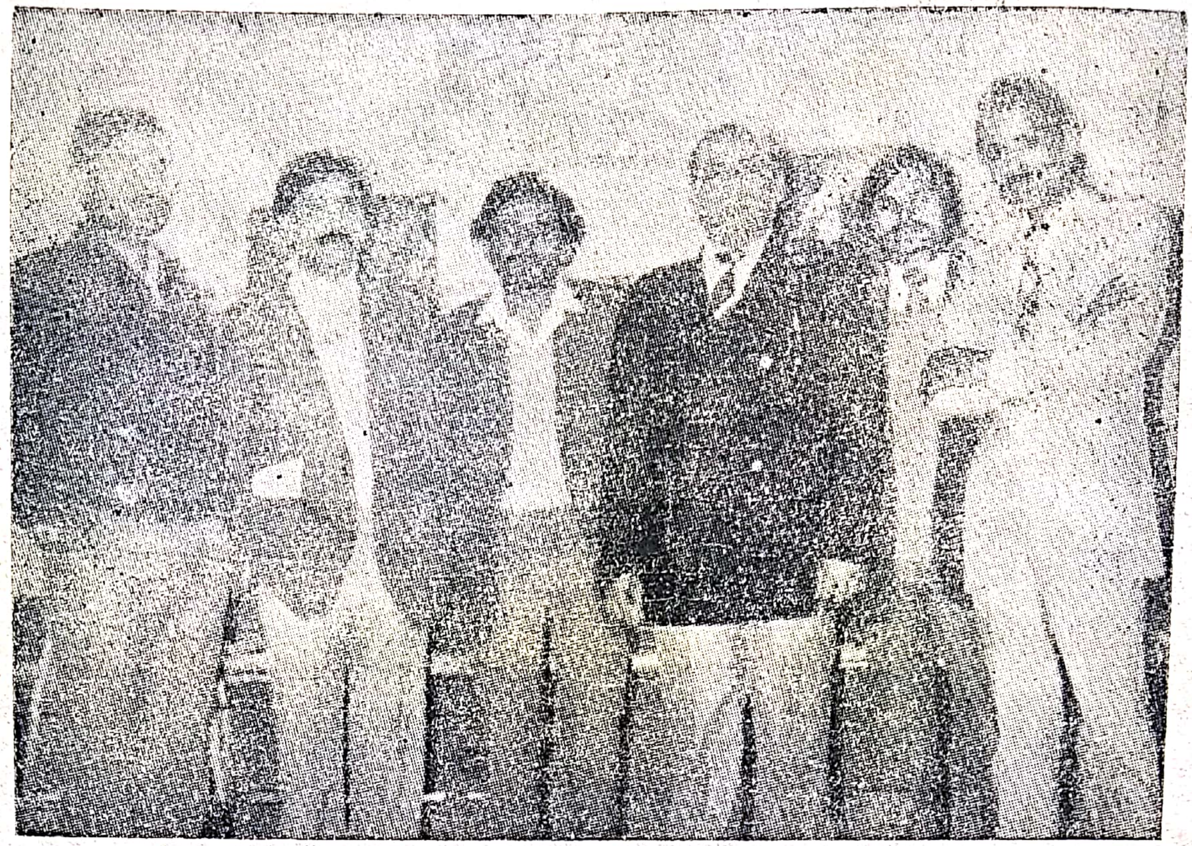

कविता-पोस्टर प्रदर्शनी के मुख्य आयोजक (दाँयें से बाँये) सर्व श्री ब्रह्मदेव शर्मा, इजहार नज्मी, रमेशराज, मोहन स्वरूप, अनिल कुमार अनल एव रामगोपाल शर्मा 'गोपेश'

राष्ट्रीय एकीकरण परिषद के तत्वावधान में कविता-पोस्टर प्रदर्शनी

की

# आयोजन समिति

संरक्षक–श्री मोहन स्वरूप

अध्यक्ष–रमेश राज

उपाध्यक्ष–कुमार अशोक
गजेन्द्र बेबस

सचिव–विजयपाल सिंह
अनिल अनल

संयोजक–रामगोपाल शर्मा 'गोपेश'

प्रचार मंत्री–सुहैल अख्तर
मौ० मुख्तार

संगठन मंत्री–शम्भू दयाल रावत
ब्रह्म देव शर्मा

सज्जा निर्देशक–शेफाली भटनागर
इजहार नज्मी



Scanned by CamScanner

कविता मानव जाति की एक ऐसी सांस्कृतिक परम्परा है, जो समूचे विश्व को उस सत्य या मंगलकारी तत्व की पहचान कराती है, जिसके बिना मानव से मानवीय-तत्वों का अबमूल्यन तो होता ही है, मानव में वे सारी प्रवृत्तियाँ भी विकसित होने लगती हैं जिनका सीधा सम्बन्ध शोषण, अराजकता, दमन, उत्पीडन, व्यभिचार और व्यक्तिवाद से होता है। तात्पर्य यह है कि कविता मानवीय मूल्यों की सुरक्षा के लिए किया गया एक ऐसा संघर्ष है, जिसमें वह उन सारे गलत मूल्यों का विरोध करती है, जो मानव जाति की सांस्कृतिक परम्परा को विकसित करने या होने में अवरोधक का कार्य करते हैं।

यदि भारतीव सांस्कृतिक परम्परा के इतिहास पर हम सूक्ष्म दृष्टि डालें तो भारतीय जनमानस के रसात्मक बौध, सौहार्दपूर्ण वातावरण, प्रेमतत्व, रागात्मकता का धीरे-धीरे अवमूल्यन इसलिये होता आ रहा है, क्योंकि उसकी सांस्कृतिक परम्परा के साथ योजनाबद्ध तरीके से वे परंपराएं जोड़ दी गयीं, जो उसे सांस्कृतिक विकास के नाम पर उन अन्धी गुफाओं में लाकर कैद कर देतीहैं, जिनके भीतर कैद मानव एक दूसरे पर भेड़िये की तरह गुर्राता ही नहीं, बल्कि एक दूसरे का खून चूसने के लिये ऐसे तरीके ईजाद करता है, जिनके तहत उसकी रक्त पिपासू प्रवृत्तियाँ सार्थक और सही ठहरायी जा सकें।

व्यक्तिवाद और व्यभिचार की प्रवृत्तियों को उचित ठहरने की परम्परा का कथित सांस्कृतिक विकास उन चालाक और शातिर दिमागों की देन है, जिन्होंने अपनी सुख-सुविधा, सत्ता, भोगने की लालसा के लिए सत्य के नाम पर जन सामान्य को ऐसे असत्य के निकट लाकर खड़ा कर दिया।



Scanned by CamScanner

जिसके तहत मानवीय मूल्यों के बीच उन व्यक्तिवादी मूल्यों ने अपना एक आदर्शवादी स्थान बना लिया, जो रसात्मकबोध के नाम पर या तो समूची मानवता को बर्बरता के साथ रोंदते है या कथित श्रृंगार के नाम पर नारी देह को भोग विलास की वस्तु बनाने की परम्परा डालते हैं। परिणाम स्वरुप एक तरफ जहाँ छूआछूत, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिक—उन्माद, धार्मिक पाखंड और आडम्बर, हमारे सांस्कृतिक गौरव के प्रतीक बने, वहीं सती-प्रथा-बाल-विवाह और और दहेज जैसे अमानवीय मूल्य हमारी नैतिकता के आदर्शवादी नमूने बनकर हमारी रागात्मकता को विषैला करते चले गये।

मानवीय रागात्मकता और उसके रसात्मक बोध के बीच फैलते हुए विष को समकालीन कवि ने जिस पीड़ा के साथ महसूस किया है और उसके अन्तर्मन से विषैलेपन के खिलाफ जैसा कविता का स्वर फूटा है, वह निस्संदेह वर्तमान कविता का ऐसा पक्ष है, जिसका सीधा ताल्लुक सत्य, शिव और सौन्दर्य से होता है।

कविता के इसी सत्य, शिव और सौन्दर्य के पक्ष को लेकर अलीगढ़ कृषि एवं उद्योग प्रदर्शनी में ५ फरवरी से १२ फरवरी १९८७ तक एक कविता-पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

सामाजिक विसंगतियों, विकृतियों, त्रासदियों पर 'सर्च लाइट' डालने वाली उक्त कविता पोस्टर प्रदर्शनी में गोपाल दास नीरज, ताराचन्द पाल बेकल, चन्द्रसेन विराट, ज्ञान प्रकाश विवेक, कुन्दन सिंह 'सजल' डा० भ्रमर, विजयपाल सिंह, ब्रह्मदेव शर्मा, कुमार अशोक, गजेन्द्रबेबस, सुरेन्द्रकुमार श्लेष रामगोपाल शर्मा गोपेश, रमेशराज, अनिल अनल, गिरीश गौरव रामगोपाल वार्ष्णेय, डा० कुंवर बेचैन, डा० देवराज, रामेन्द्र त्रिपाठी, मोहन-स्वरूप, दर्शन बेजार, अमर क्रान्तिकारी भगतसिंह के अनुज कुलतार सिंह, क्रान्तिकारी राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खां एवं स्व० धूमिल आदि की कविताओं पर विभिन्न प्रकार के लगभग साठ भाव चित्रों का प्रदर्शन किया गया।

कविता पोस्टर प्रदर्शनी विशेषांक के रूप में यह अंक आपके हाथों में है, अंक कैसा लगा ? विश्वास है आप अपनी राय से हमें वंचित नहीं रखेंगे।

रमेशराज



Scanned by CamScanner

# उद्घाटन-समारोह

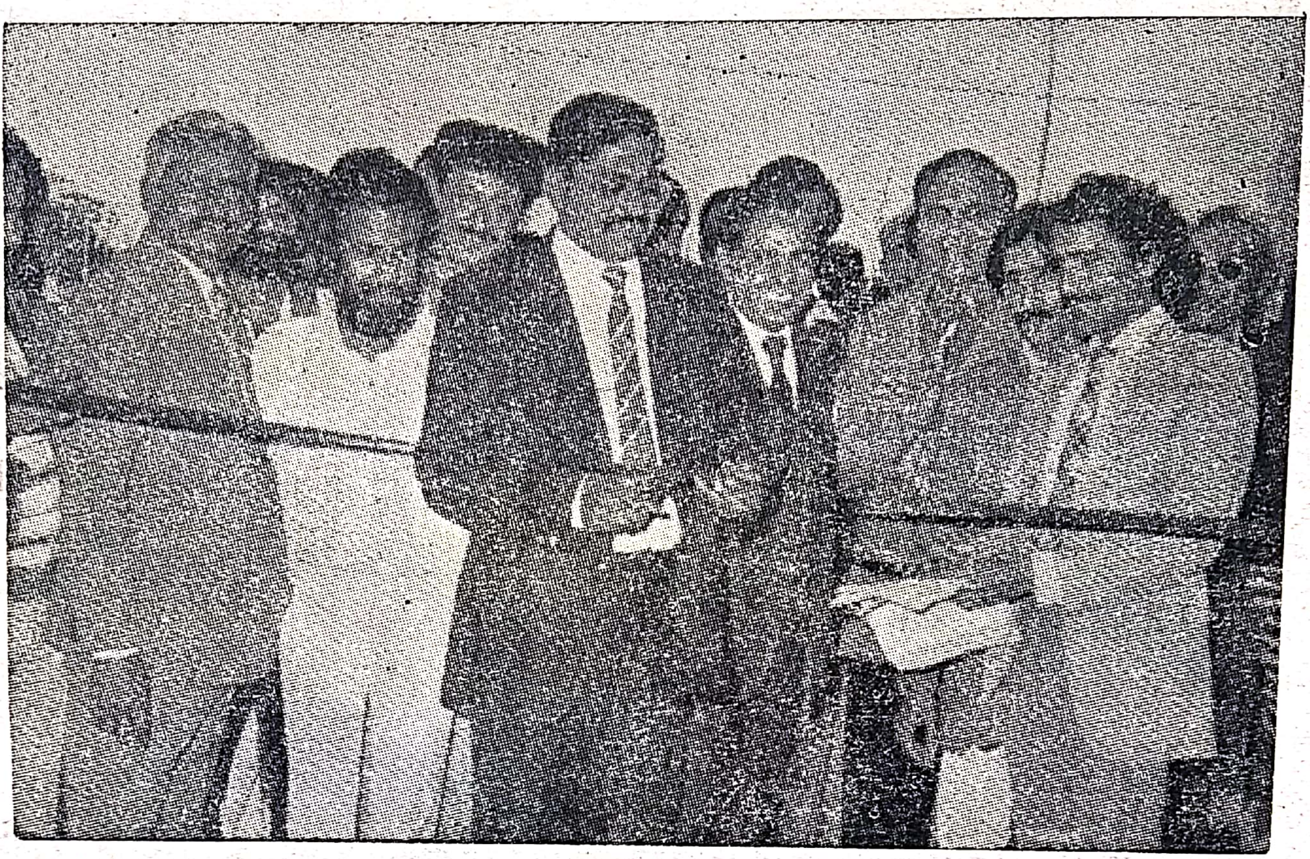

कविता-पोस्टर प्रदर्शनी का विधिवत उद्घाघन करते हुए
जिलाधिकारी श्री ललित श्रीवास्तव।

—अलीगढ़ ५ फरवरी १९८७

जिला उद्योग एवं कृषि प्रदर्शनी में राष्ट्रीय एकीकरण परिषद की जनपदीय साहित्यक इकाई द्वारा कौमी एकता को सम्बल प्रदान करने के लिए आयोजित कविता-पोस्टर प्रदर्शनी का उद्घाटन माननीय जिलाधिकारी श्री ललित श्रीवास्तव द्वारा किया गया।

कविता-पोस्टर प्रदर्शनी में दर्शाये गये, भारत को खण्डित करने वाली शक्तियों के स्वरूप को देखकर, जिलाधिकारी इतने भावविह्वल हो उठे कि वे हर चित्र को मूक होकर देखते हुए आगे बढ़ते रहे।



Scanned by CamScanner

कविता-पोस्टर प्रदर्शनी के मुख्य द्वार पर, समारोह के मुख्य अतिथि श्री आर० बी० सिंह (वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक), श्री नरेश नन्दन प्रसाद ( मुख्य विकास अधिकारी ), रमेशराज (अध्यक्ष-क० पो० प्र०), श्री ललित श्री वास्तव (जिलाधिकारी-अलीगढ़) आदि का लिया गया एक चित्र ।

तत्पश्चात् श्री ललित श्रीवास्तव ने दरबार हाल में आयोजित उद्घाटन समारोह में बोलते हुए कहा कि यदि हमें भारत की परम्परा संस्कृति और गौरव को सुरक्षित रखना है तो इस तरह के सांस्कृतिक आयोजन किये जाना नितान्त आवश्यक हैं । राष्ट्रीय भावना और विचारधारा की ओजपूर्ण अभिव्यक्ति जिस प्रकार इस कविता पोस्टर प्रदर्शनी के माध्यम से की गई है, ऐसा प्रभावपूर्ण तरीका मैंने पहले कभी नहीं देखा । ऐसे राष्ट्रीय चिन्तन को हर स्तर पर सहयोग मिलना चाहिए ।

आश्चर्य का विषय है कि राष्ट्रीय एकीकरण परिषद के पदाधिकारियों ने इस आयोजन के लिए प्रशासन एवं जनता से किसी भी प्रकार की आर्थिक मदद नहीं माँगी । मैं इस परिषद के संरक्षक श्री मोहन स्वरूप (अपर जिला अधिकारी वित्त एवं राजस्व) को विशेष रूप से धन्यवाद देता हूं कि वे कुछ युवा साहित्कारों को इस राष्ट्रीय आयोजन में साथ लेकर आगे बढ़े । इस देश-भक्ति से ओत-प्रोत एवं अभूतपूर्व आयोजन की जितनी सराहना की जाय कम



Scanned by CamScanner

है। हम अगले वर्ष इस आयोजन को और अच्छे सांस्कृतिक स्तर पर देखना चाहते हैं, जिसके लिए आर्थिक सहायता भी दी जायेगी।

उद्‌घाटन समारोह के मुख्य अतिथि श्रीयुत आर० बी० सिंह (वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक) ने पोस्टर प्रदर्शनी को देखने के उपरान्त गदगद होते हुए कहा कि एक राष्ट्रीय चिन्तन से ओतप्रोत कार्यक्रम को देखकर मुझे बहुत अच्छा लग रहा है। मुझे बड़ी खुशी है कि श्री मोहन स्वरूप जी के सहयोग से एकीकरण परिषद ने इस प्रकार की प्रभावशाली कविता-पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया है। मैं विश्वास दिलाता हूं कि अगले वर्ष यह प्रदर्शनी व्यापक स्तर पर आयोजित की जायेगी।

समारोह भाषण के दौरान तन्मय मुद्रा में कुछ प्रशासनिक अधिकारी एवं श्रोता गण।

परिषद के संरक्षक श्री मोहन स्वरूप (अपर जिलाधिकारी वित्त) ने कविता-पोस्टर प्रदर्शनी के उद्‌देश्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे देश में जिस प्रकार की राष्ट्रीय विचारधारा भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान भी वह धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है।

आज एक भारतीय दूसरे भारतीय का दुश्मन बन गया है। पूरा राष्ट्र साम्प्रदायिकता और आतंकवाद के खूनी पंजों के बीच रक्त रंजित है। सच



Scanned by CamScanner

तो यह है कि पूरा राष्ट्र खण्ड-खण्ड होने की स्थिति में है। इसलिए [इस राष्ट्रीय विखण्डन को बचाने के लिए बुद्धिजीवियों साहित्यकारों और हमारी सरकार का चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। राष्ट्रीय एकीकरण परिषद की साहित्यिक इकाई के कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों ने कविता पोस्टर प्रदर्शनी के माध्यम से यही बात समझाने की कोशिश की है कि हम भाई चारे, साम्प्रदायिक-सद्भाव से रहें, साथ ही उन शक्तियों का खुलकर विरोध करें, जो राष्ट्र को खण्डित देखना चाहती हैं।

'भारत जोड़ो' नाटक का एक दृश्य

इस प्रदर्शनी के असंख्य दर्शकों में से यदि हम कुछ का भी मन परिवर्तित कर सके और उन्हें राष्ट्रीय-धारा से जोड़ सके तो यह हमारी बहुत बड़ी उपलब्धि रहेगी। मैं एकीकरण परिषद के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं से आग्रह पूर्वक कहना चाहता हूं–कि ऐसे कार्य होते रहें।



Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय एकीकरण परिषद के संयोजक श्री रामगोपाल शर्मा ने इस समारोह के संचालन के दौरान कहा कि कविता-पोस्टर प्रदर्शनी की योजना मित्रवर रमेशराज व मोहन स्वरूप जी के साथ, समय-२ पर हुई साहित्यिक चर्चाओं के दौरान बनी, जिसे साकार बनाने में प्रशासनिक अधिकारियों व सहयोगी-मित्र जैसे सुहैल अख्तर, इजहार नज्मी, ब्रह्मदेव शर्मा, कुमार अशोक शैफाली भटनागर आदि ने जिस प्रकार सहयोग प्रदान किया है, उसके लिये मैं आभारी हूं। आज का युवा विशेषकर कौमी एकता के संदर्भ में यह बात अच्छी तरह जानता है कि सूरज अपनी प्रकाश किरणों को हर समय फेंकता रहता है। किरणों में आन्तरिक रूप से एक तारतम्य, रिद्म है। अगर किसी आँगन में खिलती हुई रोशनी टुकड़े-टुकड़े हुई है तो इसके मूल में सूरज दोषी नहीं, बल्कि जिम्मेदार है वह खड़ी मीनार, जिसके गुम्बदों से टकराकर रोशनी खंड़ित होती है।

परिषद के अध्यक्ष श्री रमेशराज ने परिषद के आयोजकों, कार्यकर्त्ताओं जिलाधिकारी महोदय व वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक के प्रति आभार व्यक्त करने के उपरान्त कहा कि कौमी एकता वस्तुत: कोई भेड़-बकरियों की एकता नहीं है। कौमी एकता के लिए आवश्यक तत्व है—पूरे राष्ट्रीय चरित्र की एकता। जब तक हम भारतवासियों की मानसिकता राष्ट्र को समर्पित नहीं हो जाती, तब तक किसी भी प्रकार की कौमी एकता सम्भव नहीं, हमें हर स्तर पर राष्ट्रीय चरित्र की सुरक्षा करनी होगी।

उद्घाटन समारोह के अन्त में श्री मोहन स्वरूप द्वारा आयोजित व श्री मंजर अब्बास द्वारा निर्देशित लघु नाटिका 'भारत जोड़ो' का मंचन किया गया, जिसके सफल मंचन में असलम, अस्मत, बाबर, नज्मी खान, अजय झींगरन जैसे मंजे हुए कलाकारों का विशेष योगदान रहा।

उद्घाटन समारोह का समापन 'हम हिन्दुस्तानी, हम हिन्दुस्तानी' सहगान के साथ बड़ी ही भाव-बिभोर स्थिति में किया गया।



Scanned by CamScanner

# मैं हिन्दुस्तान हूँ

**कविता** के मर्म को चित्रांकन के माध्यम से और अधिक सशक्त बनाकर जन-सामान्य के बीच रखने का प्रयोग, कोई नया प्रयोग नहीं है। विद्यापति, सूर, तुलसी, कबीर, बिहारी, से लेकर निराला और दुष्यन्त कुमार तक अनेक कवियों के काव्य में वर्णित मनोरम भाव-सौन्दर्य एवं कोमल कल्पनाओं को समय-समय पर चित्रकारों द्वारा रंगों से सजा सँवार कर सजीव रूप प्रदान

किया जाता रहा है। कवियों एवं चित्रकारों के इस मिलेजुले प्रयासों ने जहाँ एक ओर कविता को काव्य-मर्मज्ञों के वर्ग-विशेष से हटाकर जन सामान्य के रखने का सराहनीय कार्य किया है, वहीं दूसरी ओर कला और साहित्य के विकास के नये सोपान की भी जानकारी दी है। अलीगढ़ जनपद की कृषि एवं औद्योगिक प्रदर्शनी में वर्ष १९८७ में आयोजित कविता-पोस्टर प्रदर्शनी इसी श्रृङ्खला की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसके माध्यम से कुछ युवा साहित्यकारों एवं चित्रकारों ने सम-सामयिक रचना-धर्मिता को आम आदमी के निकट पहुंचाने का एक ठोस और सफल प्रयास किया। कई दृष्टियों से इस प्रदर्शनी के महत्व को स्वीकारा सराहा गया।

एक तो पहली बार एक व्यापक स्तर पर प्रतियोगिता के रूप में इस प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें भाग लेने वाले प्रतियोगी चित्रकार स्कूल एवं कालेजों के विद्यार्थी हैं। इसी प्रकार सम-सामयिक समस्याओं एवं त्रासद युगबोध से सम्प्रक्त रचना-धर्मिता को स्वर देने वाले उत्साही कवियों की रचनाओं को संग्रहीत किया गया। कुछ उत्साही युवा साहित्कारों का यह प्रयास हर वर्ग के हजारों नागरिकों द्वारा प्रतिदिन देखा गया। जिससे चित्र-कारी तो आर्ट-गैलरियों एवं कला भवनों की बन्दिशों से बाहर आकर सार्व-जनिक स्थल पर प्रदर्शित हुई ही, समसामयिक कविता ने भी अपने वर्ण्य विषय से आमआदमी को उसके बीच जाकर छुआ।

इस प्रदर्शनी का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पहलू जिसे कहा जा सकता है, वह यह रहा कि प्रदर्शनी में संग्रहीत एक भी चित्रकृति ऐसी देखने को नहीं मिली, जो तथाकथित आदर्शवाद या रामराज्य की थोथी कल्पनाओं, माँसल रूप-सौन्दर्य या मनोरंजन के सस्ते साधनों से लबालब भरी हुई कला की हामी होने का संकेत देती हो, जिसमें दर्शक सीत्कार भरकर चित्रों को देखे या चटखारे लेकर कविताओं को पढ़ सके, अपितु इसके विपरीत सभी चित्र कृतियाँ यथार्थ की ठोस जमीन पर रहकर जीवन की वास्तविक स्थिति की सघन अनुभूतियों की बेबाक अभिव्यक्ति करने वाले अर्थात कला को मानव जीवन के परिप्रेक्ष में रखकर देखने वाले द्रष्टिकोण से ओतप्रोत लगीं। यहाँ तक कि प्राइमरी स्कूलों से प्राप्त चित्रों तक में या तो वर्तमान समस्याओं की ओर संकेत किया गया था या मानव जीवन की समृद्धि और विकास के लिए आवश्यक तत्वों की ओर निर्देश।

एक नन्हे चित्रकार ने (अवधेश गुप्त, कक्षा ४) ने परमाणु युद्ध के खतरों की ओर संकेत करते हुए अपनी नन्ही कलम से एक चित्र बनाया था जिसमें परमाणु विखण्डन द्रश्य था। तथा नीचे लिखा था–No. 1



Scanned by CamScanner

चित्रकला की दृष्टि से इस कृति में रंगों का प्रयोग भले ही चटखदार न रहा हो, किन्तु इस चित्र के मूल में छिपी हुई लोक कल्याण और युद्ध को भयावह त्रादसी से छुटकारा पाने की सहज मानव-संवेदना बच्चे के मन को किस स्तर तक प्रभावित कर सकती है, इसका चित्रण दर्शकों के मन को छू गया। आज के कलाकार के यथार्थोन्मुखी दृष्टिकोण को देखकर प्रसन्नता तो होती ही है, साथ ही आश्चर्य भी, कि युगीन समस्याओं के प्रति आज का संवेदनशील मन जितना जागरूक है, उतना ही सूक्ष्म और साफ दृष्टि से सम्पन्न भी।

मसला चाहे कौमी दंगे फसाद का हों या देश के बढ़ रहे आन्तरिक तनाव का या सीमा पर बढ़ रहे युद्ध के खतरों का। आज के कवि की सूक्ष्म दृष्टि इस तथ्य से परिचित है कि 'चन्द आतिश की दुकानें कॉम की कायल हैं बस और बाकी सूरतें तो भूख से घायल हैं बस, (रामगोपाल शर्मा)। यही चन्द आतिश की दुकानें, जिनका पेशा बारूद बेचकर दौलत कमाना है, अपने स्वार्थों को बरकरार रखने के लिए दंगे चाहती है, करवाती हैं दंगों के लिए बहुत जरूरी है- आदमी को दायरों में बांटना।

कमाल यह है कि आज का आदमी इन धन्धेबाज सियासी साजिशियों के उद्देश्य से अपरचित है। वह नहीं समझ पाता कि सिर्फ रोजी-रोटी की समस्या से जनता का ध्यान हटाने के लिए साम्राज्यवादी शक्तियाँ तरह तरह के रंगीन शगूफे छोड़ती है। इनके थोथे और सारहीन फतवे जिस होशियारी के साथ एक ओर आतिश का खुला सौदा कर रहे हैं। तो दूसरी ओर निरीह मानवीयसंवेदना को जाति, वर्ग, धर्म, सम्प्रदाय, पेशा, पूँजी, भाषा, क्षेत्र और शिक्षा के आधार पर खेमों में बांटकर मानव मन में विद्वेश और वैमनस्य भर रहे हैं। यह एक कवि की सूक्ष्म दृष्टि और तीखी पकड़ से परे नहीं है।

दुख तो तब होता है जब सत्ताई साजिश के शिकन्जे में कसा भोला मन सच और झूठ में भेद नहीं कर पाता तब अनेक कवियों ऋिषयों एवम् दार्शनिकों के दर्शन और बाद अस्तित्वहींन हो जाते है, सियासी चालबाजों के जातिबाद के आगे। "यू० पी० की मिट्टी से उपजे कितने दर्शन, कितने बाद......पर ये किसको रहा याद......जब से पनपा जाति वाद" (मोहन स्वरूप) यह वर्ग भेद का जुनून आदमी को इस तरह पागल कर देता है। कि वह सही रास्ता दिखाने वाले व्यक्ति को अपना दुश्मन समझने लगते है। "मैंने बताया लाख लहू सबका सुर्ख है, फिर भी उन्होंने देख लिया काट कर मुझे" एक कवि की धर्म, यह सब कुछ सहने के वाद भी, इस साजिश के पीछे

(शेष पृष्ठ ४१ पर)



Scanned by CamScanner

# दर्शक दीर्घा से...

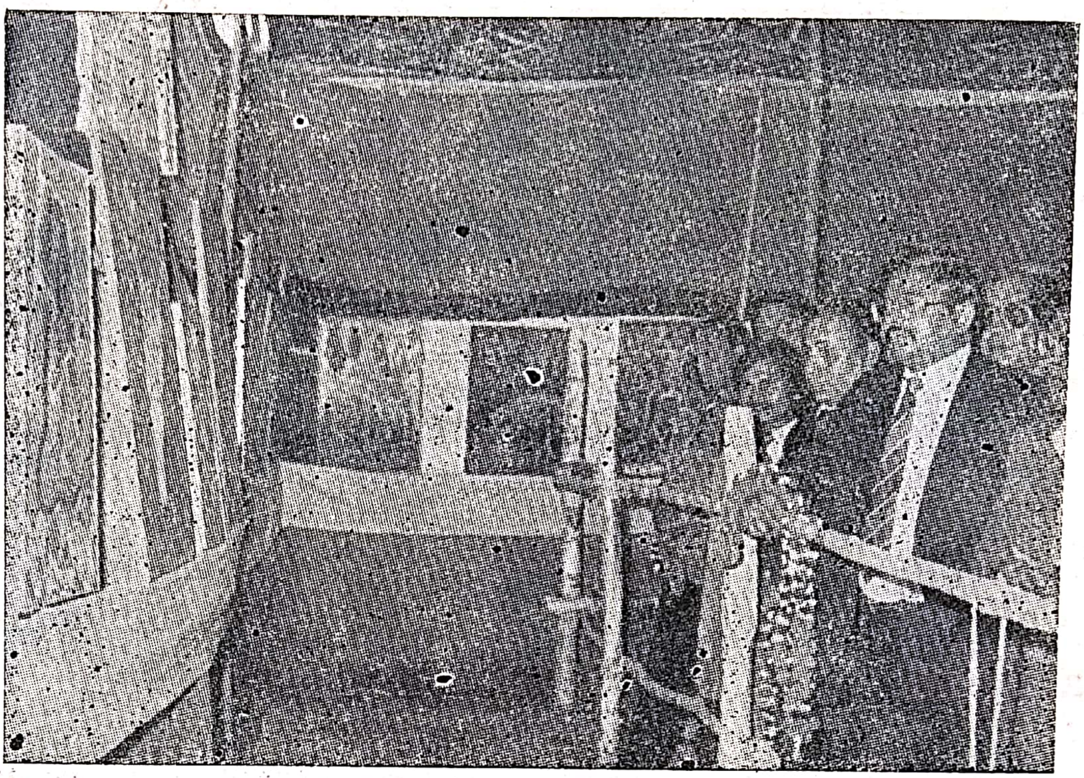

A novel experiment done with no assistance from the exhibition fund. I wish, I to had give the some financial grant for organising the same. I hope this will go a long way in helping the cause of Nationai Integration.

ललित श्रीवास्तव
जिलाधिकारी, अलीगढ़

कविता पोस्टर प्रदर्शनी के आयोजकों को तहेदिल से मुबारकबाद। मैंने पहली बार इतनी अच्छी प्रदर्शनी अपनी टाइप की देखी। मुझे पूरी आशा है कि भविष्य में इस प्रदर्शनी में और स्कूल तथा कॉलिज के बच्चे भाग लेंगे। मेरी शुभकामनाएं इनके साथ हैं।

आर० वी० सिंह
वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक, अलीगढ़

तेवरीपक्ष-8



Scanned by CamScanner

राष्ट्रीय एकीकरण के लिए व्यापक स्तर पर किये गये इस सार्थक प्रयास को देखकर में आश्चर्य चकित रह गया । कविता पर बने भाव-चित्रों के माध्यम से मानवीय मूल्यों के प्रति एक सच्ची और ईमानदार तड़प इस प्रदर्शनी के आयोजकों में मुझे दिखी । इस नेक कार्य के लिए कोटिशः बधाई !

—मधुर नज्मी

साहित्यकार सदस्य, राष्ट्रीय एकी० परि०, उ० प्र० शासन ।

इस प्रकार की प्रदर्शनी राष्ट्रीय एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण योग दे सकती हैं ।

—वेद प्रकाश अमिताभ
हिन्दी विभाग, धर्म समाज कॉलिज, अलीगढ़

प्रदर्शनी सांस्कृतिक उत्थान के लिए जीवन्त नमूना है ।

गोपाल कृष्ण
महदौरी, इलाहाबाद

A small begening has been made for cause wich is vital.

Tara Hasan
Corrospondent P. T. I.

Good begining of a Great cause.

Promod Kumar
Indian die casting, Aligarh

India need peace not pieces.

Feroz Rahi
110; Sir Saiyad hall, A.M.U.

Every body must see and learn something through the paintings and poems.

Vishwajeet Chohan
Air Force Stn. Jaipur.

It is a nice action.

Shamshuddin
Abdullah Hall, A M,U.

तेवरीपक्ष-8



Scanned by CamScanner

कविता पोस्टर प्रदर्शनी अपने ढंग की अनूठी प्रदर्शनी है, जो कि कौमी-एकता को यथार्थवादी धरातल पर लाकर परिभाषित ही नहीं करती, बल्कि चित्रित भी करती है। इस प्रकार का तालमेल, कौमी-एकता को एक नारे के रूप में ही नहीं वरन् एक मूकदर्शी को भी अन्दर तक झकझोर देने की शक्ति संचालित करता है। आयोजकों को आगामी वर्षों के लिए शुभकामनाएँ।

पी० के० अग्रवाल
डिप्टी कलेक्टर, अलीगढ़

राष्ट्र को एक सूत्र में बाँधने में (कविता-पोस्टर प्रदर्शनी के माध्यम से) बहुत बड़ा योगदान।

अंजनी कुमार 'दृगेश'
पान दरीबा, इलाहाबाद

प्रदर्शनी अनूठी व अद्वितीय।

मुकेश कुमार गुप्त
सिविल लाइन्स, झाँसी

कला और संस्कृति को नंगे ढंग से पेश करने का प्रयोग एवं प्रयास स्तुत्य है।

मदन मोहन 'उपेन्द्र'
सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़

वर्तमान वातावरण में इस सत् प्रयास के लिये बधाई।

एस० के वर्मा
जिला संयोजक (कांग्रेस आई)

ईश्वर इस प्रदर्शनी के बहुत ही पास दिखा मुझे।

रामेन्द्र त्रिपाठी
अधिशासी अधिकारी, सिकन्दरा राऊ

अध्यक्ष जी ! जिस तरह की अपेक्षा आपसे की जा सकती है, कविता पोस्टर प्रदर्शनी ठीक वैसी ही बन पड़ी है।

श्याम बेबस
मनोरंजन कर निरीक्षक, बुलन्दशहर

यह उत्साही प्रयास कविता और चित्रकला के क्षेत्र में अविस्मरणीय रहेगा।

नरेन्द्र तिवारी
संचालक- नेहरू यु० क० के०, अलीगढ़



Scanned by CamScanner

मेरे भाई रमेशराज की योजना काफी अच्छी है।

अजय अंचल
जयगंज, अलीगढ़

अब कलंकित समाज मोहन स्वरूप के हाथों ही बदलेगा।

देशबन्धु
विष्णुपुरी, अलीगढ़

साथियो ! बढ़े चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।

प्रवीनकुमार एडवोकेट
संयोजक-किसान सभा, अलीगढ़

पोस्टरों व कविताओं के माध्यम से व्यक्त (तथ्य) वर्णनानीत हैं।

ब्रजकिशोर पाठक
सोवियत पुस्तक प्रदर्शनी, लखनऊ

शायद समाज इस तरह के आयोजनों से कुछ सीख लें।

महामन्त्री
ब्लॉक कांग्रेस छर्रा, अलीगढ़।

आज भारतवासियों को ऐसे प्रदर्शन की जरूरत है।

हसीनुद्दीन, अध्यापक-ए० एम० यू० सिटी स्कूल

भगवान भास्कर की रश्मियों का कार्य यहां मौजूद है।

बाबूराम वर्मा, कार्यकर्त्ता–यु० नि० यो०

एक सार्थक सर्जनी की अर्थवती-ललक श्री मोहन स्वरूप में दिखी।

ज्ञानेन्द्र अग्रवाल, अलीगढ़

बहुत खुशी हुई कि हम तक कुछ तो आया।

घूरेलाल शर्मा, अलीगढ़

कविता को चित्रों का माध्यम बनाकर समझाने का प्रयास अद्वितीय।

पाड़ी अलीगढ़ी

चित्र मार्मिक, हृदयग्राही। नीचे लिखी पंक्तियां अवश्य पढ़ें।

शकील, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली



Scanned by CamScanner

अलीगढ़ प्रदर्शनी का तत्व यही है।

श्रीनिवास शर्मा, अलीगढ़

शान्ति स्थापनार्थ ऐसे कार्य जरूरी हैं।
नये सराहनीय, प्रशंसनीय कार्य हेतु साधुवाद।

ध्रुवेन्द्र 'विद्रोही', कृपाल सिंह 'कलश', अलीगढ़

हर साल जरूरी है।

भगवती प्रसाद, अलीगढ़

नुमाइश का सार है यह शिविर।

एम० उल्लाह, ए. एम. यू.

हम जब तक जियेंगे, भारत के लिये जियेंगे।

लियाकत अली अंसारी, अतरौली

देश में धर्म और कौम के तालमेल के लिये क्यों न हर इंसान को शिविर में लगी तस्वीर समझा जाये और मायूस-भययुक्त चेहरों को कविता।

कुंवर शैलेश बिट्टन, सं० आफत मेल

तमाम चित्र इस बात का सबूत हैं कि इन्सानियत ही मजहब है।

मौ० आरिफ हुसैन आरिफ, अलीगढ़

मुझे पता नहीं था कि वतन पर मिटने वाले अभी जिन्दा हैं।

शाह मोहम्मद, ए० एम० यू०

भारत को आवश्यकता है आज भाईचारे की।
कोई सुनले फरियाद मुझ बेचारे की।

मौ० मकसूद, सिकन्द्राबाद

मेरी मुराद मजहब की अस्ल रूह से है दिखावा या रियाकारी से नहीं।

कासिम रजा जाफरी, ए० एम० यू०

तस्वीरें हिन्दुस्तान के मुख्तलिफ मजहबी जूनून को जामा-ए-एतदाल फराहम करती हैं।

बाबर इलियास, अलीगढ़



Scanned by CamScanner

# तेवरी

जिंदगी जीने को कुछ आधार चाहिए
पेट को सपने नहीं, आहार चाहिए।

जो न त्यागे सच की सीता, बैठ गद्दी पर
इस तरह के राम का अवतार चाहिए।

डूबती जाती है साथी नाव भँवर में
आदमीयत के लिये पतवार चाहिए।

लाजमी अब हो गया है युद्धरत रहना,
शब्द के भीतर कोई तलवार चाहिए।

हम नहीं आदी हैं दिल्ली ! जीहुजूरी के,
वो रहें, जिनको कि ये दरबार चाहिए।

△ देव कुमार



Scanned by CamScanner

# प्रदर्शनी : एक झलक

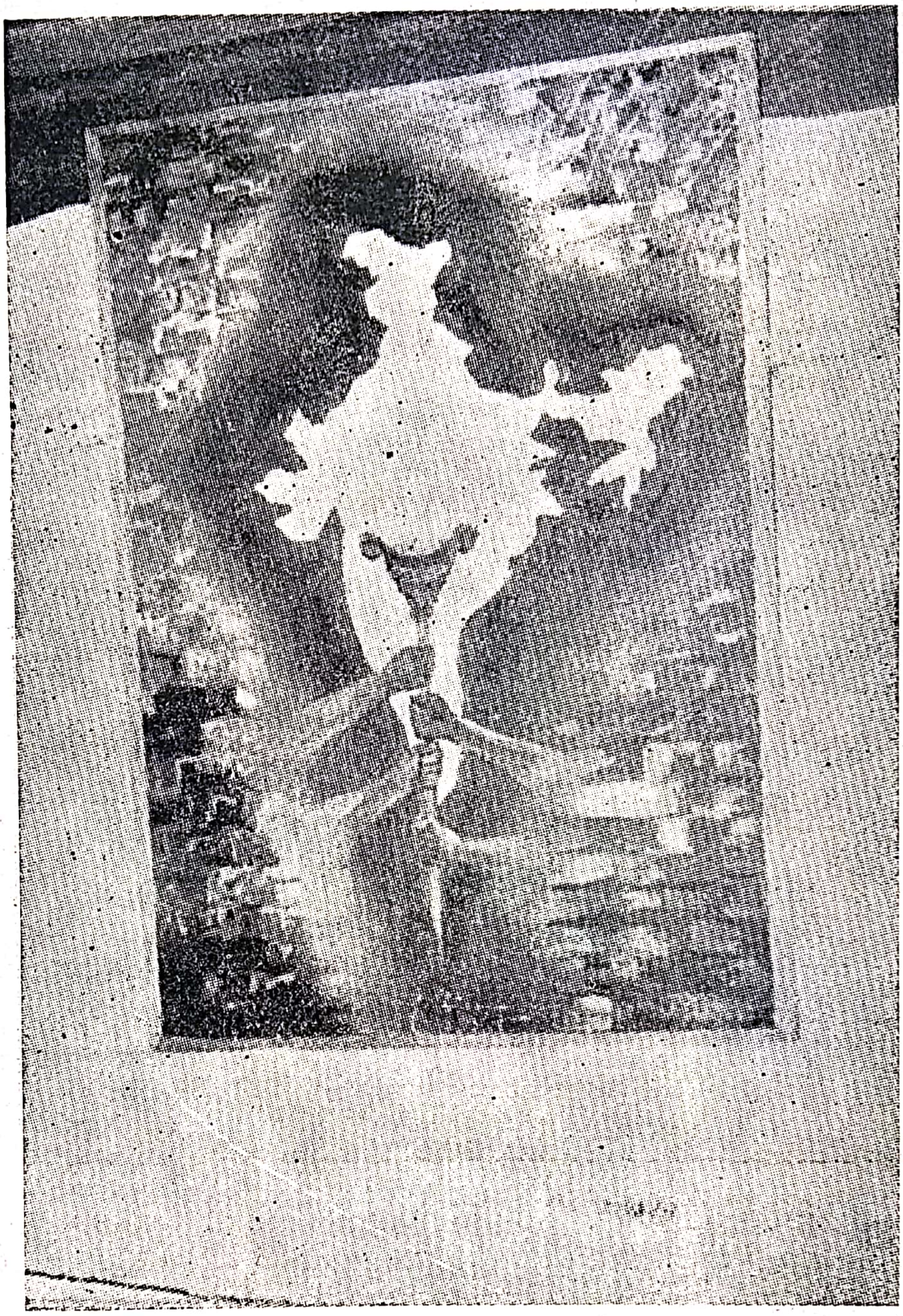

( चित्र–कु० कल्पना सारस्वत )

न चाहूँ मान दुनिया में, न चाहूँ स्वर्ग को जाना।
मुझे वर दे यही माता, रहूँ भारत पे दीवाना।
भवन में रोशनी मेरे रहे हिन्दी चरागों की।
स्वदेशी ही रहे बाजा बजाना, राग का गाना॥

–क्रान्तिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल'

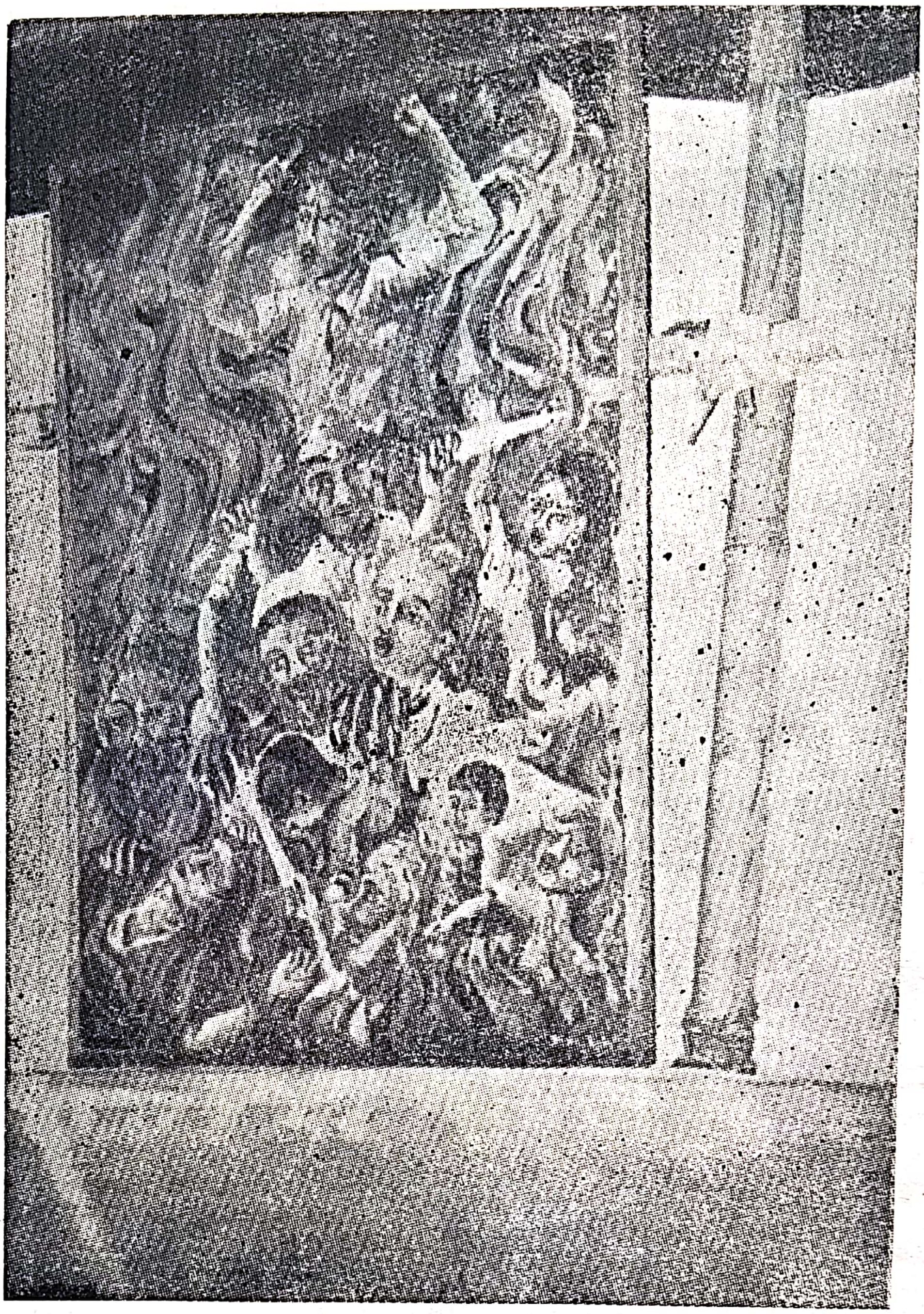

( चित्र–कु० शशिकला )

रात के दुख में दिन खड़ा नहीं होता।
मोती हर सीप में पड़ा नहीं होता।
धर्म के नाम पे लाशों को बिछाने वालो !
धर्म इन्सान से बड़ा नहीं होता।।

–रामेन्द्र त्रिपाठी



Scanned by CamScanner

( चित्र—कु० कमलेश शर्मा )

जिन्दगी जब भी कुम्हलाई, तो हमने तेवरी लिख दी।
कभी जो आँख भर आई, तो हमने तेवरी लिख दी।
दहेजी––दानवों के बीच कोई कुलबधू घर में।
सिसकती, रोती जब पाई, तो हमने तेवरी लिख दी।।

–रमेशराज



Scanned by CamScanner

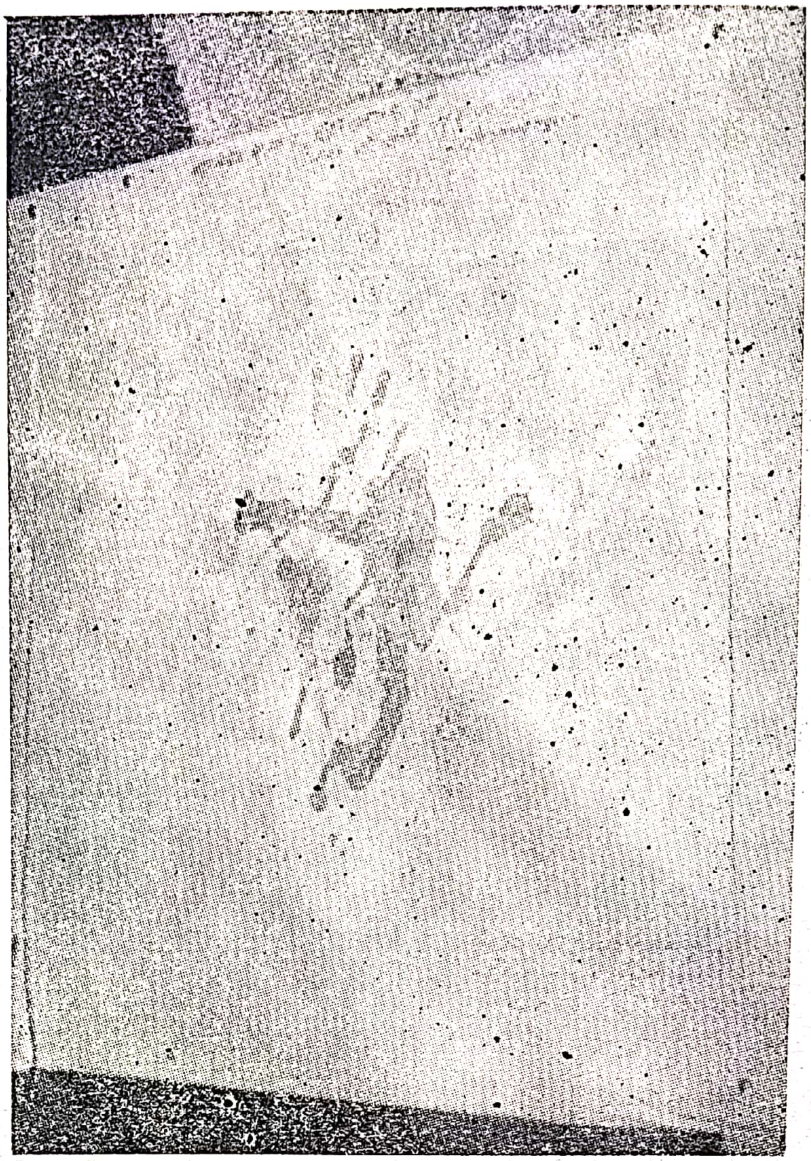

बड़ा बेचैन मौसम है दिशाए पुरखतर होंगी।
न जाने चादरें कितनी लहू से और तर होंगी ?

—अज्ञात



Scanned by CamScanner

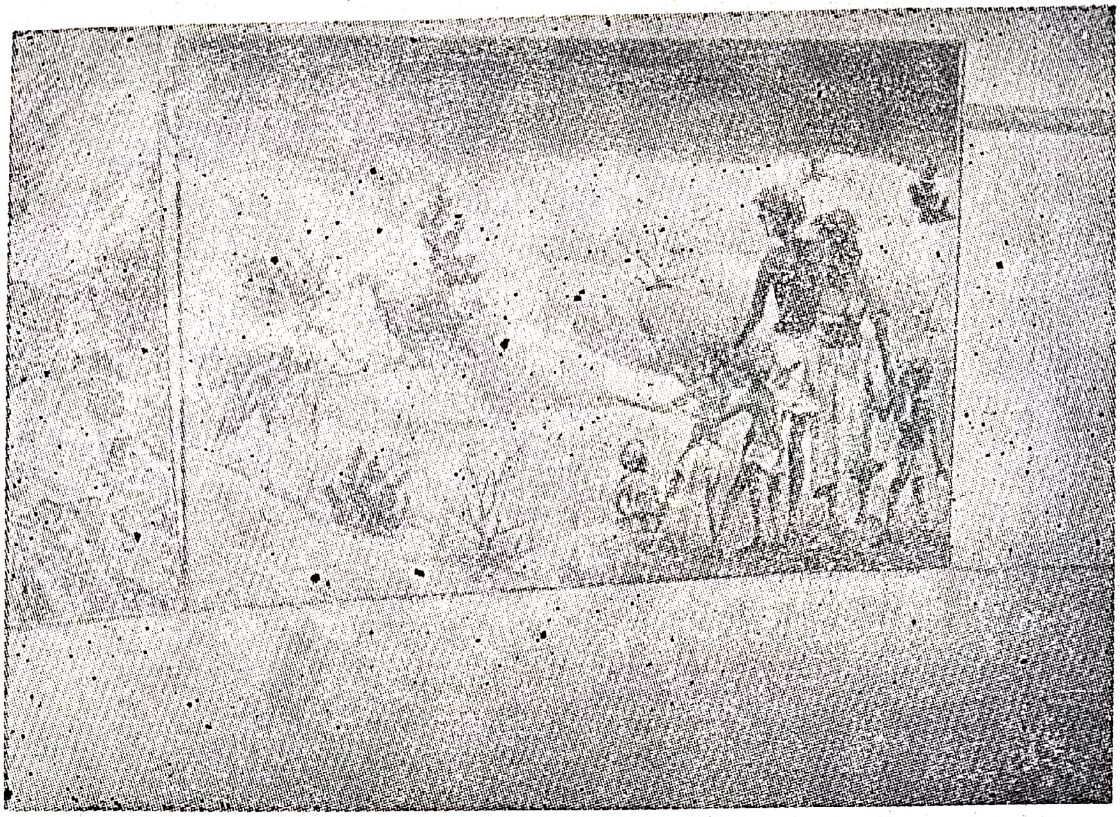

( चित्र–कु० मीनाक्षी अग्रवाल )

हर हृदय में बढ़ रही अब पीर है।
देश की हालत बड़ी गम्भीर है।
प्रश्न रोटी का सभी के बक्ष में।
आजकल चुभता हुआ–सा तीर है॥

–दर्शन 'बेजार'



Scanned by CamScanner

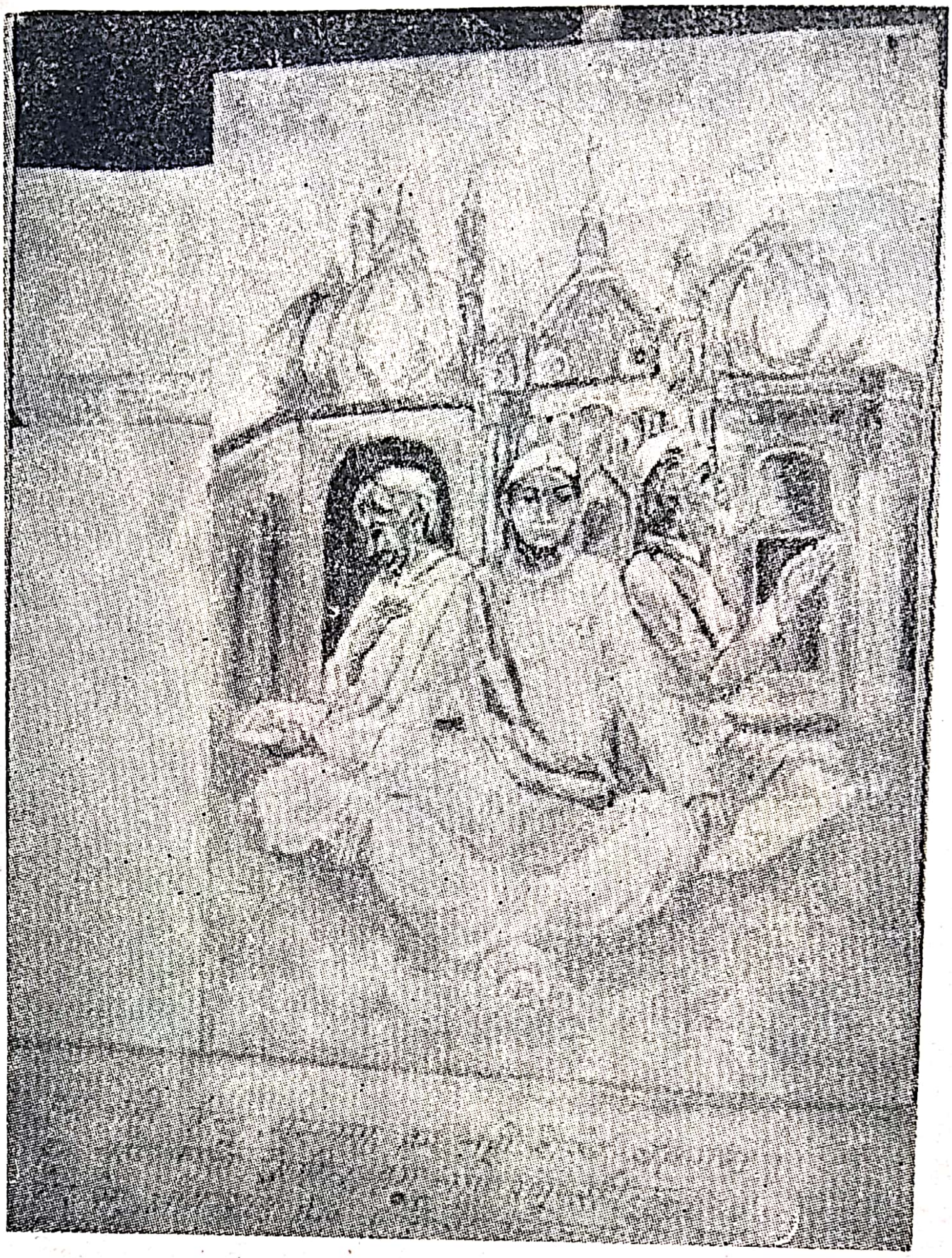

( चित्र–कु० प्रियम्बदा )

हम नहीं हिन्दु-मुसलमाँ
हम नहीं शेखो बिरहमन ।
हम नहीं काजी पुरोहित
हम नहीं रामू-रहीमन ।।
भेद से आगे खड़े हम,
फर्क से अन्जान हैं हम ।
प्यार है मजहब हमारा
और बस इन्सान हैं हम ।।

–गोपालदास 'नीरज'



Scanned by CamScanner

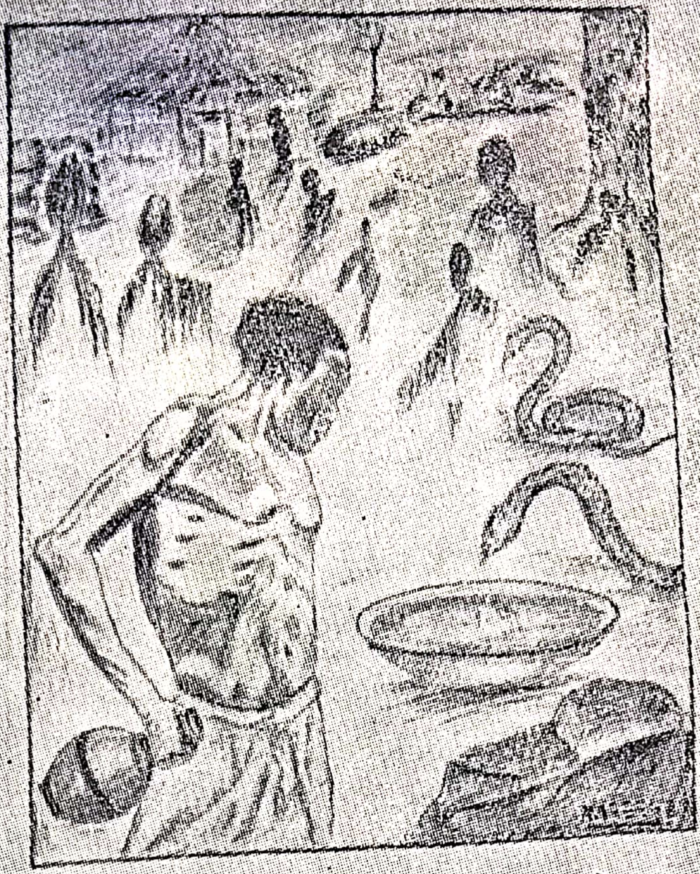

जिनमें तुम लौ से जिये भइया बेंजामीन।
कहाँ बुझे ऐसे दिये, भइया बेंजामीन।
तुमने अपना कंठ भी, उनमें किया शरीक।
जिन कंठों ने विष पिये, भइया बेंजामीन॥

جن میں تم لو سے جئے بھیا بنجامن ॥
کہاں بجھے ایسے دیے بھیا بنجامن
تم نے اپنا کنٹھ بھی ان میں کیا شریک ॥
جن کنٹھوں نے وش پئے بھیا بنجامن ॥



Scanned by CamScanner

काँटे, छुरी, बारूद, बम, बन्दूक व तोपें न जोड़,
जोडना ही है अगर तो, टूटते लोगों को जोड़ ।

● ब्रह्मदेव शर्मा देव



Scanned by CamScanner

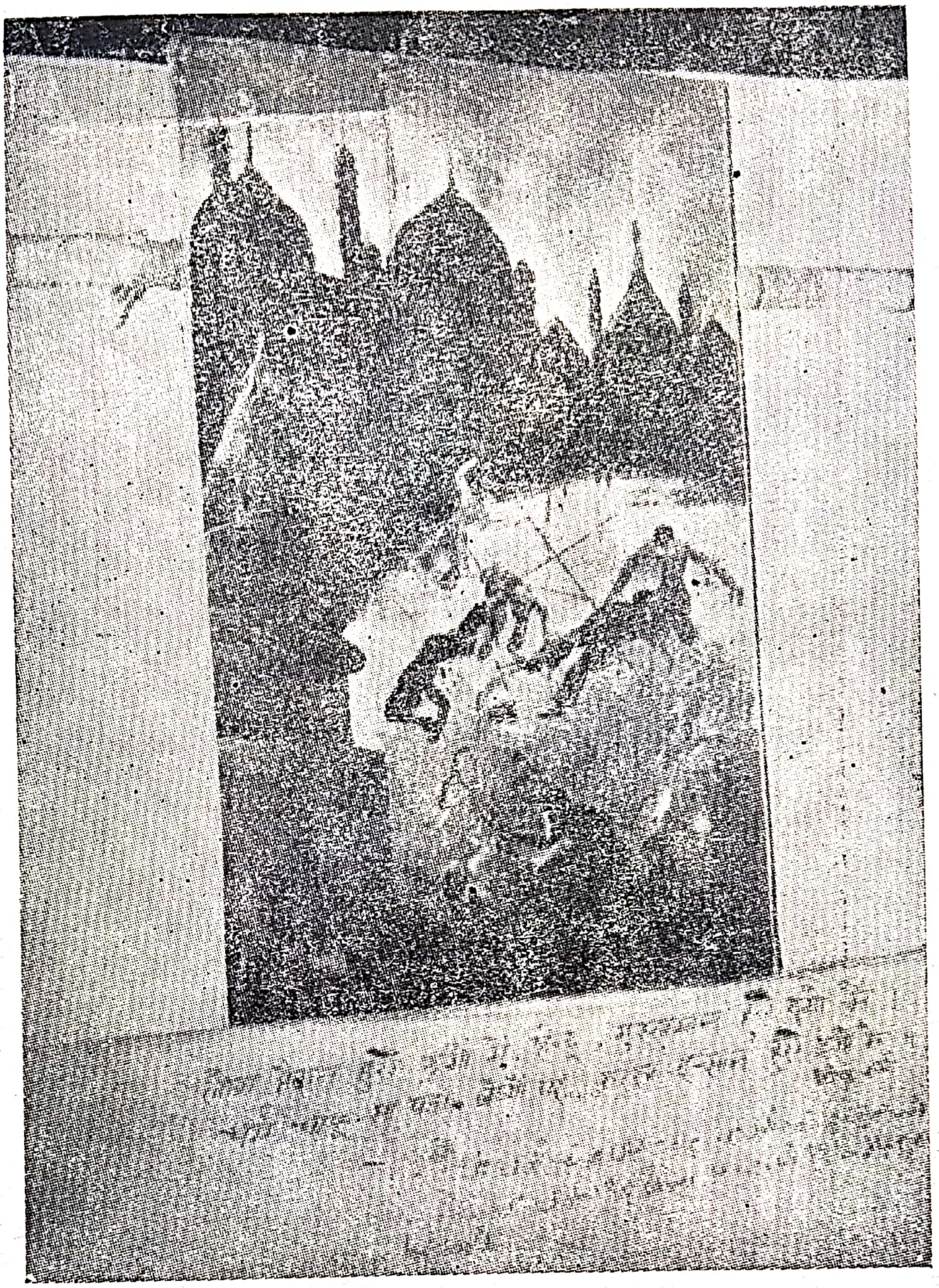

( चित्र–प्रतिमा कुमारी )

लोग हैवान हुए दंगों में
हिन्दू-मुसलमान हुए दंगों में।
धर्म चाकू-सा पड़ा लोगों पर
कत्ल इन्सान हुए दंगों में।

–योगेन्द्र शर्मा



Scanned by CamScanner

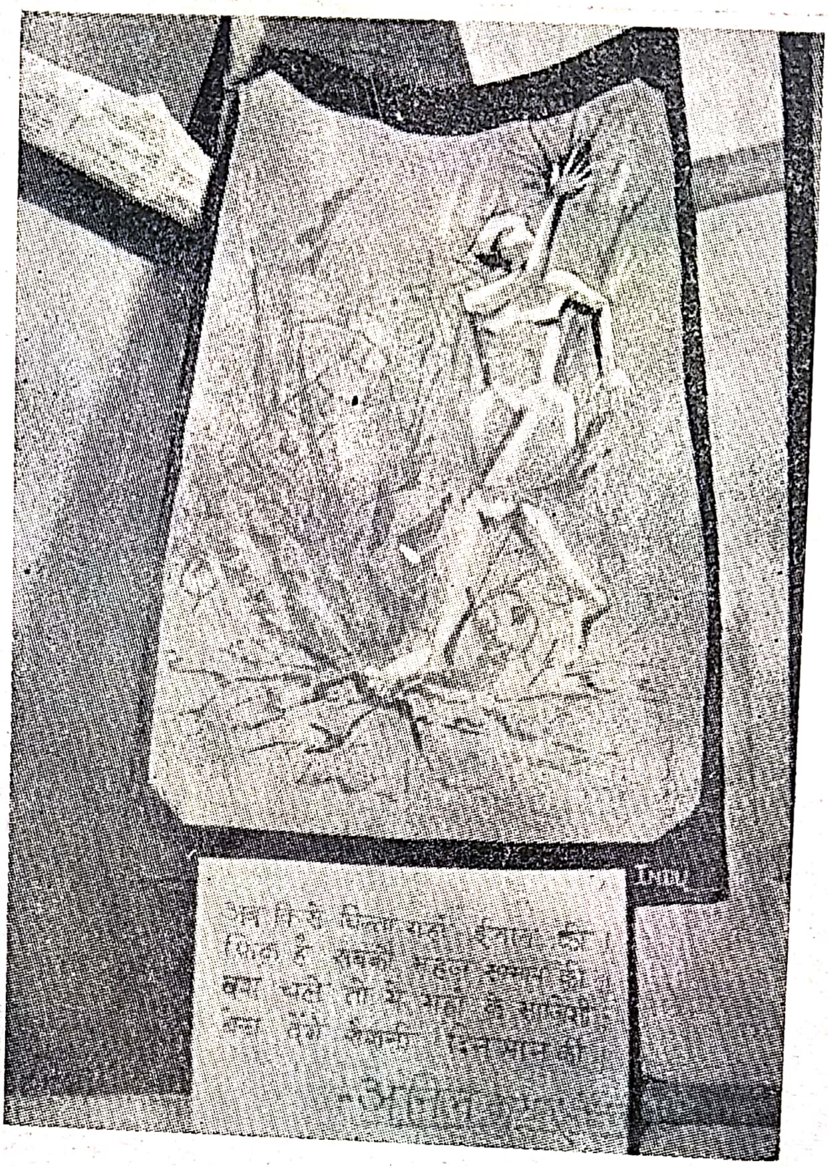


( चित्र–कुमारी इन्दु गौतम)



Scanned by CamScanner

# अब मिट्टी की प्रवृत्ति बदली जाय

● विजयपाल सिंह

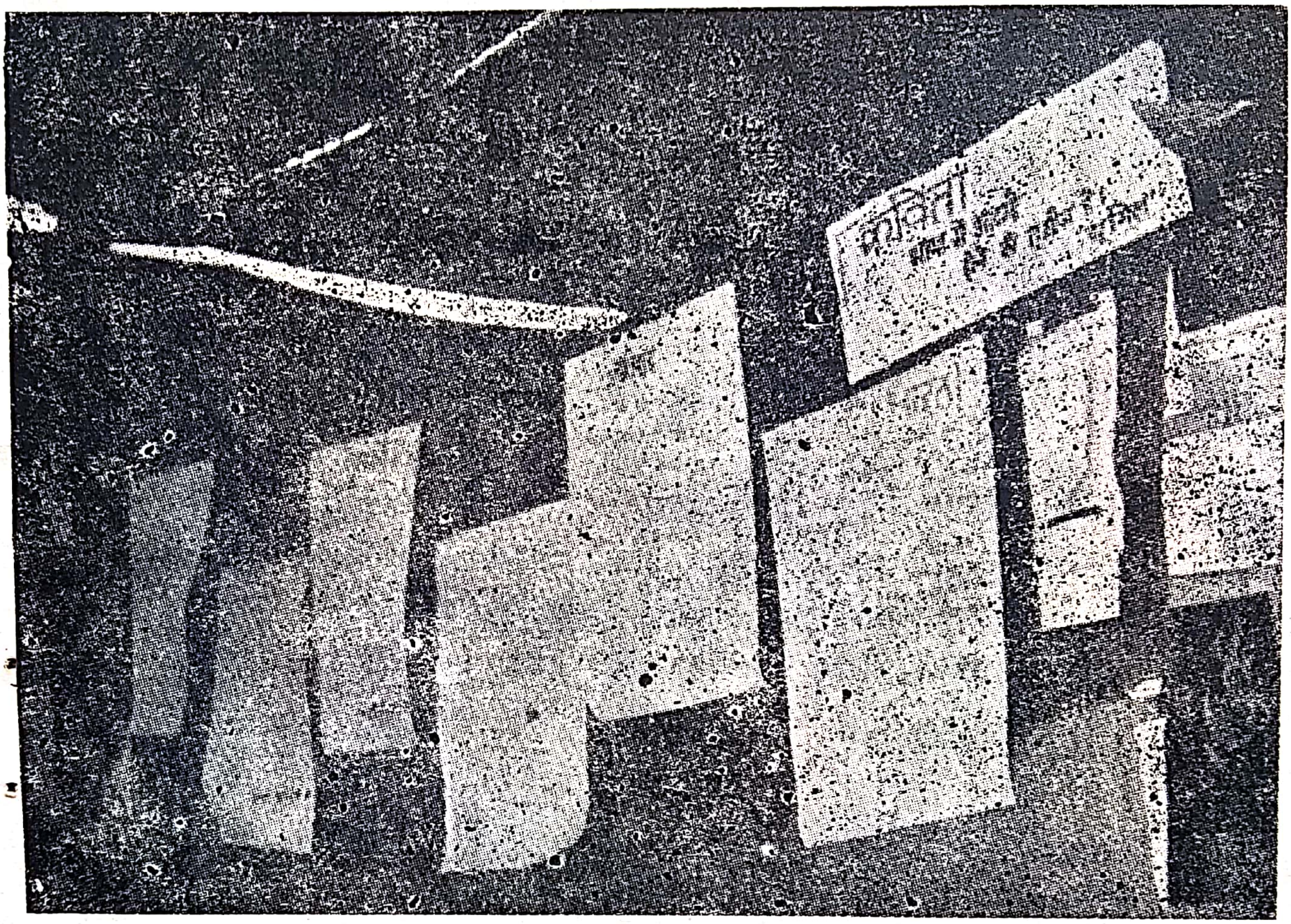

विचारों की अभिव्यक्ति का जहाँ साहित्य एक सशक्त माध्यम बनकर रहा है, वहीं चित्रकला ने भी विचारों को व्यक्त करने में कम सफलता हाँसिल नहीं की है। साहित्यकार ने जिस प्रकार सूक्ष्म अनुभूतियों का शब्दांकन किया है, चित्रकार भी उसी स्तर पर चित्रांकन करने में पीछे नहीं रहा है। जिस प्रकार साहित्य (कविता) राज दरबारों का प्रशस्तिगान, नायिका का देहगान एवं प्रकृति का सौन्दर्यगान गाती हुई ,आज प्रेमचन्द के गाँव तक आ पहुँची है और होरी के शोषण की गाथा गा रही है, धनियाँ की लाचारी पर द्रवित हो रही है, गोबर को दातादीन और झिंगुरी सिंह के खिलाफ साहस का तमंचा थमा रही है, उसी प्रकार– चित्रकला भी अजन्ता-ऐलोरा और खजुराहो की यात्रा तय करती हुई आज फुटपाथ के चित्र खींच रही है, आदमखोर सूरतों

तेवरीपक्ष-8 पृ० 29

की पहिचान करा रही है, धूमिल के 'तीसरे आदमी' पर फोकस डाल रही है कुल मिलाकर साहित्यकार और चित्रकार दोनों ही आज समय-सापेक्ष सत्य के निकटतम बिन्दु हो गये हैं। और दोनों ही एक धरातल पर खड़े होकर सार्थक सृजन के लिए प्रतिबद्ध हैं।

अलीगढ़ औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी में राष्ट्रीय एकीकरण परिषद् (अलीगढ़-इकाई) के सौजन्य से (श्री मोहन स्वरूप अपर जिलाधिकारी वित्त राजस्व के संरक्षण में, इकाई अध्यक्ष श्री रमेशराज एवं इकाई संयोजक श्री रामगोपाल शर्मा के सघन प्रयासों से) आयोजित 'कौमी एकता' एवं कविता-पोस्टर प्रदर्शनी शिविर ने चित्रकार और साहित्यकार (कवि) दोनों को एक मंच से प्रस्तुत करने का प्रयास किया, जो अलीगढ़ प्रदर्शनी के लिए अछूता एवं जन-जागरण के संदर्भ में महत्वपूर्ण प्रयोग माना जाना चाहिए।

आज जमीन में दरारें पड़ती जा रही हैं और आदमी बँटता चला जा रहा है, मानव मूल्य टूटते चले जा रहे हैं,ऐसे में इन मूल्यों को जोड़ने से पहले जरूरी है कि सबकी जमीन एक हो, और जमीन एक करने के लिए आवश्यक है कि मिट्टी की वह प्रवृत्ति बदली जाय जो जमीन में दरार डालती है और इस प्रवृत्ति को बदलने के लिए जरूरी है कि प्रवृत्ति के पोषकों का अन्त किया जाय तभी सही अर्थों में 'कौमी एकता' स्थापित होगी। चूंकि कौमी एकता जाति, धर्म या सम्प्रदायों की एकता नहीं है बल्कि टूटते बिखरते मानव मूल्यों की एकता है। कविता-पोस्टर प्रदर्शनी इसी दिशा में उठाया गया एक कदम है, जिसकी सफलता कुछ तात्कालिक एवं अन्य दूरगामी प्रभावों में देखी जा सकेगी।

शिविर में लगे कविता-पोस्टर, कवि के साथ बोलते हुए नजर आते हैं। जब चित्रकार ने खाली पेट, और धँसे हुए गालों की मेहनतकश जिंदगियों को उकेरा होगा, तब वह निश्चित रूप से उसी जमींन पर एवं उसी स्थिति में खड़ा होगा, जिस जमीन पर, जिस स्थिति में खड़े होकर कवि ने निम्न काव्याभिव्यक्ति की होगी–

हर तरफ बढ़ने लगी अब पीर है
देश की हालत बड़ी गम्भीर है
प्रश्न रोटी का सभी के वक्ष में
आजकल चुभता हुआ-सा तीर है।

–दर्शन 'बेजार'

तेवरीपक्ष-8



Scanned by CamScanner

गाँवों में आज भी सूदखोरी और जमींदारी व्यवस्था के तहत आम-आदमी-की आस्थाओं के साथ बलात्कार करते हुए कुछ आदमकद फल-फूल रहे हैं, इन की सूरतें तब और भी भयावह एवं नृशंस रूप ले लेती हैं, जब ये पूँजी से सम्बन्धों को तोलते हैं और बेटी जैसे नाजुक मूल्य को जलाकर राख कर डालते हैं। जब ऐसे गाँव पर चित्रकार फ्लैश लाइट डालता है तो वह कवि की उसी पीड़ा को भोग रहा होता है, जिसमें कवि इन पंक्तियों में शब्दों को पिरोता है–

आस्था गिरवी रखी है गाँव में
कर्ज की बगिया हरी है गाँव में
ला न पायी ससुर की खातिर दहेज
इसलिये मुनियां जली है गांव में।

–कुन्दनसिंह 'सजल'

निराला और सुकरात जैसे मूल्य आज भी अपने ऊपर आरोपित अनुचित अपमान सह रहे हैं। जहर के घूँट गले में उतार रहे हैं। सत्य के चिराग को हथेलियों से ढक रहे हैं, झुलस रहे हैं, मगर चिराग को तेज आंधी में भी चेतना शून्य नहीं होने दे रहे हैं। बेंजामिन मोलॉइस इन्हीं मूल्यों की शृंखला की ताजा कड़ी है। जिसके साथ आत्मसात् करता हुआ रचनाकार अपनी सम्वेदनशीलता यूँ व्यक्त करता है–

जिनमें तुम लौ-से जिये, भैया बेंजामीन
कहाँ बुझे ऐसे दिये ? भैया बेंजामीन।
तुमने अपना कंठ भी उनमें किया शरीक
जिन कंठों ने विष पिये, भैया बेंजामीन।

※ रमेशराज

वहीं एक चित्रकार समाज में छिपी जंगल-सी वीरानी पर तूलिका फिराता है और एक जलते दिये के पास उजड़ी देह के बेंजामीन मोलॉइस को खड़ा कर देता है, तो निश्चित रूप से चित्रकार, बेंजामिन जैसे मूल्यों का बचाव, सम्मान का सोमरस पीते हुए भेड़ियों और विषधरों से करने की अपील करता है।

इन्हीं राष्ट्रवादी मूल्यों को सुरक्षा कवच पहनाते हुए चित्रकार हिन्दुस्तान के नक्शे में दो हाथों पर पूरे देश को ज्योतिमय करता हुआ चिराग रख देता है तो कौन नहीं समझता कि ये दोनों हाथ रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथी अश्फाक उल्ल खाँ के ही होने चाहिए, जिनके शब्द-शब्द से देश भक्ति टपकती-सी लगती है–



तेवरीपक्ष-8

Scanned by CamScanner

न चाहूं मान दुनिया में न चाहूं स्वर्ग को जाना
मुझे वर दे यही माता रहूं भारत पे दीवाना

तथाकथित धर्म के जंगल में जब आदमी प्रवेश करता है, तो वह या तो भेड़िया हो जाता है अथवा भेड़िये का शिकार। वह जहर पीता है या जहर उगलता है। परिणामतः पूरा माहौल विषाक्त और हिंसक बन जाता है। तथा कथित धर्म के ठेकेदार समाज की मानसिकता में जहर के बीच बोते हैं, जिसकी फसलें काटता है, आस्था के अंधे कुँए में जीने वाला पूरा समाज। ऐसे धार्मिक परिवेश का चित्रांकन कवि की इन्हीं अनुभूतियों का चित्रांकन है–

है विषैला आजकल वातावरण
पी गया कितना गरल वातावरण
दर्द को काटेंगे सारी उम्र हम
बो गया है वो फसल वातावरण

–गिरीश गौरव

और इन्हीं स्थितियों में कसमसाता रचनाकार अगर ये कह देता है कि "मजहबो कौम के किरदार बदलने होंगे, ये तअस्सुब के अशआर बदलने होंगे" तो वह कौन से सत्य पर चाकू उछाल देता है? वह तो चार हाथों को जोड़ते हुए चित्र तक अथवा इन पंक्तियों तक पहुंचने का ठोस कदम उठाता है जो आदमी-आदमी के बीच पुल तैयार करती हैं–

जिंदगी को इस तरह से मोड़कर लिखो
आदमी से आदमी को जोड़कर लिखो

–डॉ० दिनेश अन्दाज

कविता-पोस्टर प्रदर्शनी में इन्हीं चित्रों की श्रृङ्खला में एक और चित्र है, इसमें सिंहासन के नीचे टूटी पड़ी है साहित्यकार की कलम और पैरों की स्तुति कर रहा है उसका समूचा साहित्य। यह वही कलम है, जिसने हमेशा हिंसक मूल्यों की आरती उतारी है। देवता का दर्जा दिया है, एक मैले आचरण को प्रशस्तिगान की श्वेत चादर से ढंका है। अपनी ईमानदारी को अय्याशों की बगल में बिठाकर मुहरें और अशरफियाँ लूटीं हैं। आज का ईमानदार रचनाकार ऐसे साहित्यकार को नंगा करने और नंगा कहने में नहीं चूकता तो उसकी ईमानदारी पर कौन उंगली उठा सकता है–

पुरस्कार हित बिकी कलम अब क्या होगा?
भाटों की है जेब गरम अब क्या होगा?

–दर्शन बेजार

तेवरीपक्ष-8



Scanned by CamScanner

कुल मिलाकर कविता-पोस्टर प्रदर्शनी 'कौमी-एकता' के बुनियादी सवालों पर दृष्टिपात ही नहीं कराती, बल्कि सवालों को हल करने के रास्ते भी दिखाती है। हिन्दुस्तान की घुन लगी मानसिकता में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के समुचित प्रयास करती है, टूटते मूल्यों की हिफाजत में जहाँ जनमूल्यों की पहरेदारी करती है, वहीं उन पत्थरों को भी दूर फेंकती है जो इन मूल्यों पर उछलते हैं। प्रदर्शनी स्याह अँधेरों में प्रकीर्णित होता एक ऐसा ज्योतिपुंज भी है, जिसमें सभी चीजें साफ-साफ देखी जा सकती हैं। आदमी और भेड़ियों के बीच एक सरल रेखा खींची जा सकती है। चित्रकृतियाँ पुस्तकालयों और अन्य व्यापारिक प्रतिष्ठानों में कैद साहित्य को चौपालों और अलावों तक तो लाती ही है, साथ ही जन-मानसिकता के उस टाँके को भी खोलती है, जो समकालीन कविता को आदमी तक पहुँचाने से रोकता है। वे आदमी को हवाई यात्रा नहीं कराती, बल्कि उसकी आँखें उस जमीन की तरफ घुमाती हैं, जिस पर उसे जीवन यात्रा तय करनी है।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि 'कविता-पोस्टर' प्रदर्शनी उस नींव में ईंट भर रही है, जिस पर भविष्य में 'कौमी एकता' का भवन खड़ा होगा। जिसमें हर मानव-मूल्य अपनी पूरी मूल्यवत्ता के साथ सुरक्षित रहेगा।

लघु कथा–

## न्याय

–शम्भूदयाल रावत

गाँव में एक भयंकर डकैती कांड हुआ। दरोगा जी गिद्ध की तरह घटना स्थल पर जा धमके। तहकीकात में उन्हें ज्ञात हुआ कि डकैती गाँव के एक किसान के यहां पड़ी है, जिसमें किसान के पुत्र की हत्या एवं लाखों की सम्पत्ति की लूट हुई है तथा एक डकैत घटना स्थल पर ही मारा गया है।

सौभाग्य से प्रदेश के मंत्री जी भी उन्हीं दिनों क्षेत्रीय भ्रमण पर आये हुए थे। डकैती कांड की सूचना मिलते ही वह भी घटना स्थल पर पहुंचे। शोकाकुल किसान को न्याय दिलाने का आश्वासन देकर, जैसे ही मंत्री जी ने मृत डकैत को देखा और तुरन्त ही थानाध्यक्ष के कान में कुछ फुसफुसाये और लड़खड़ाते पैरों से चलते बने।

मृत डकैत मंत्री जी का रिश्तेदार था।

शम्भू दयाल रावत,
शोध-छात्र
धर्म समाज कालेज, अलीगढ़



Scanned by CamScanner

# यह कविता है

—कुमार अशोक

भावना और आस्था के
धरातल पर
खंडित नहीं हो पाता है मेरा मित्र
जब कि मैं जानता हूं कि
मित्रता उसके लिये
एक नाटक है।
चुग्गा डालकर
किसी भी खूबसुरत
चिड़िया को फँसाना
उसकी एक खूबसूरत आदत है।
समाज के बीच
सम्मान का सोमरस पीता हुआ मित्र
जब भी किसी छात्रा को
कोई शोध कराता है
तो देखते-देखते एक चमत्कार हो जाता है
कुछ ही दिनों में
शोधरत छात्रा
अजीब मनः स्थिति में खो जाती है
यानी
पर्दे के भीतर
एक खूबसूरत चिड़िया
गर्भवती हो जाती है।
यह सब जानते हुए भी
इस सच्चाई को मानते हुए भी
सोचता हूं
आखिर क्यों,
और किसलिये



Scanned by CamScanner

अपने ऐसे मित्र के लिये
मैं अपने संस्कारों में इंतजाररत हूं
और आखिर किसलिए
अपने विवेक की कसौटी पर शून्यवृत हूं।

मेरी कल्पनाओं में
मेरा वह कामरेड मित्र
पूरे ब्रह्मांड में
चक्कर काटता हुआ
अक्सर मुझे नजर आता है,
क्षीर सागर में लक्ष्मी के साथ
रसवंती वार्ताओं में
डूबा हुआ विष्णु।
तब मुझे लगता है
कि वह सुन नहीं पाता
नारद और शिव के मुँह से मृत्युलोक के संवाद
उसे नहीं सुनाई देती
चीखती हुयी जनता की
कोई दु:खभरी आवाज।
ऐसे में मुझे
मृत्युलोक का हर असहाय आदमी
नजर आता है,
शोषण के रावण के सामने
हर बार हारता हुआ राम,
ऐसे में
मेरे मन का
सुलगता हरेक हिस्सा
हो जाता है
कभी पंजाब
तो कभी आसाम।

मेरे मित्र की मुस्कराहट
जैसे किसी अन्डुये के फूल की खिलखिलाहट
जो खोलना चाहती है
निरर्थकता में


Scanned by CamScanner

सार्थकता के द्वार
यानि उसके मुँह से
बार-बार टपकती है
भलमनसाहत की लार।
तब मुझे लगता है
कि यह
देवता की शक्ल में
एक ऐसा शैतान है
फिलहाल जिसके लिए
राजनेता होना एक वरदान है।

→

अब तुम यह न कहना
कि मैं अन्यथावश
यह लिख रहा हूं
दरअसल
यह कविता है
जहाँ आदमी
भाषा से पेट और
पेट से व्यवस्था के
संबन्धों को पकाता है
यह कविता है
जिसे मेरे मित्र का 'जनवादी' चेहरा
मंच पर भुनाता है
और कहीं दूर
कहीं दूर इसे खाता है।

२५, रैन बसेरा, सुरेन्द्र नगर, अलीगढ़

कार्य कर रही उन पाशविक शक्तियों के घिनौने मन्तव्यों से पर्दा हटाने में नहीं चूकता जिनके कारण भारतीय अन्तर्आत्मा पीडित और अपमानित होती है --" दुखी मत हो…यह मेरी नियति है…मैं हिन्दुस्तान हूँ। जब भी मैंने उन्हें उजालों से जोड़ा है…उन्होंने मुझे इसी तरह अपमानित किया है… इसी तरह तोड़ा है…" (धूमिल)।

एक-अत्याचार, शोषण, दमन, अराजकता से विहीन स्वस्थ समाज की तलाश में भटकता आज का युवा कवि वातावरण के विषैलेपन पर कविता के माध्यम से अपनी जिस प्रकार की प्रतिक्रिया व्यक्त करता है, वह उसकी वह आन्तरिक वेदना है, जो उसे एक जहरीलेपन के अहसास से सिक्त करती चली जाती है-" है विषैला आजकल वातावरण, पी गया कितना गरल वातावरण। दर्द को काटेंगे सारी उम्र हम, बो गया है वो फसल वातावरण।"

(गिरीश गौरव)।

आज कथित दाम्पत्य सूत्र बन्धन, मधुर मिलन के नाम पर-सीधी सौदे-बाजी का एक कुत्सित सिलसिला बन चुका है, जिसमें तमाम मानवीय मूल्यों को ताक पर रखकर नव-बधुओं को जिन्दा आग के हवाले कर दिया जाता है। ऐसे में आज का ईमानदार कवि अपना कवि-कर्म उस ससुराल का ही इतिहास लिखने में सार्थकता महसूस करता है, जहाँ उसके जिस्म से आग की लपटें उठी हैं-" कल विदा हँसकर हुई थी, आज मृत पायी गयी, अधजली उस लाश की ससुराल का इतिहास लिख।" (रामगोपाल शर्मा गोपेश)

जहाँ गरीबी, शोषण, अराजकता, भुखमरी के शिकार हिंदुस्तान को कोई चित्रकार चिथड़े लपेटे हुए चित्रांकित करता है, और उसे कंकालनुमा एक कारुणिक दृश्य में तब्दील कर देता है तो वहीं एक कवि की कविता सल्तनत के नाम एक खुला बयान बन जाती है--

कल नुमाइश में मिला, वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूरा नाम तो बोला कि" हिन्दुस्तान है।"
मुझमें रहते हैं करोडों लोग चुप कैसे रहूँ
हर गजल अब सल्तनत के नाम एक बयान है।" (दुष्यंतकुमार)

● रामगोपाल शर्मा 'गोपेश'

संयोजक-राष्ट्रीय एकीकरण परिषद (अ० इ०)



Scanned by CamScanner

हुजूर ! सरकार ! मेरे परवरदिगार !
आपकी अदालत में खड़ा
मैं यानी हिन्दुस्तान
सारे धार्मिक ग्रन्थों पर
एक साथ हाथ रखकर कहता हूँ-
मेरे उन सारे बच्चों में
नही थी कोई साम्प्रदायिक-भावना
नहीं था कोई धार्मिक-उन्माद
जो दंगों में हुए
चाकुओं के शिकार
जिन पर किये गये
छुरियों, गोलियों से वार ।

हुजूर ! सरकार ! मेरे परवरदिगार !
आपके ही इशारे पर
आपके राजनीतिक गुन्ड़ों ने की
मेरे बच्चों की हत्याएं,
कभी बाबरी मस्जिद
तो कभी राम जन्मभूमि के
साम्प्रदायिक मुद्दों को लेकर
आपने फैलायीं
हाँ आपने फैलायीं
विषैली अफवाहें ।

हुजूर ! सरकार ! मेरे परवर दिगार !
हमें नहीं चाहिए
नहीं चाहिए हमें
ऐसी शान्ति और सद्भाव,
जिसमें आपकी
कथित धर्मनिरपेक्षता
बनकर उभरे
एक रिसता हुआ घाव ।

हुजूर ! सरकार ! मेरे परवरदिगार !


Scanned by CamScanner

आपकी अदालत में खड़ा
मैं यानी आहत हिन्दुस्तान
सारे धार्मिक ग्रन्थों पर
एक साथ हाथ रखकर कहता हूँ-
कि जिस दिन हो जायेंगे
ये मेरे बच्चे समझदार,
उस दिन
हां उस दिन
फेल हो जायेंगे
तुम्हारे, सारे के सारे
साम्प्रदायिक हथियार ।
मैं सच कहता हूँ
हाँ सच कहता हूँ
हुजूर ! सरकार ! मेरे परवरदिगार !

रमेशराज

---

वर्तमान स्थितियों में गोपियों का श्रीकृष्ण को संदेश-

"चूल्हा जला न रात से, ऊधौ कहियो जाय
कुछ भी पका न रात से, ऊधौ कहियो जाय ।
भूखी सोयीं गोपियाँ, बच्चे रहे उदास
कोई हँसा न रात से, ऊधौ कहियो जाय ।"


शतकों की परम्परा में एक अद्वितीय तेवरी-शतक

## प्रेम न जानें श्याम

( शीघ्र प्रकाश्य )

कवि-रमेशराज

मूल्य-बीस रुपये

सार्थक-सृजन प्रकाशन, ईसा नगर, अलीगढ़




Scanned by CamScanner

हमारे देश का दुर्भाग्य यह है कि इस देश की सांस्कृतिक परम्पराओं पर छात्र-छात्राओंको शोध कराने वाले हमारे हिन्दी प्रवक्ताओं से लेकर मोटी मोटी पुस्तकों के सृजनकर्ता, सांस्कृतिक परम्पराओं के नाम पर किसी विशेष जाति, सम्प्रदाय की उन सारी परम्पराओं को तो खोज निकालते हैं, जो उसकी कथित रागात्मकता की रीढ़ हैं, लेकिन यह रीढ़ कितनी खोखली, दुर्गन्ध मय, साम्प्रदायिक, आडम्बरों से युक्त है तथा इसे किस प्रकार मजबूत और सार्थक बनाया जा सकता है ? इस बिन्दु पर आते-आते उनकी सारी की सारी सांस्कृतिक बुद्धि को घुनलग जाता है। सांस्कृतिक परम्पराओं को समझने परखने का दम्भ भरने वाले ऐसे कथित साहित्यकार या बुद्धिजीवी सिर्फ किताबी कीड़े बनकर पुस्तकों की चाहरदीवारी के बीच जी रहे हैं। जिसका परिणाम यह है कि चाहरदीवारियों में कैद साहित्य के आधार पर वे आज भी भारत वर्ष की भक्तिकालीन, रीतिकालीन स्वरुप की कल्पना सँजोये हुए किताबी बहसों का सड़ा गला बुरादा उगल रहे हैं। भारतीय जन-मानस के बीच पनपे संघर्ष की गाथाएँ उन्हें थोथी, बेबुनियाद और बेमानी नजर आती हैं।

महाविद्यालयी सुविधाओं के बीच जीने वाले ऐसे साहित्यकारों, बुद्धि-जीवियों का वास्ता यदि सरकारी दफ्तरों की धांधलेवाजी, मजदूरों के शोषण, पुलिस तंत्र के यातना शिविरों, भूखे, नंगे देशवासियों से पड़े तो समझें कि क्या होता है संघर्ष ? क्या होते हैं आदर्श ? क्या होता यथार्थ ? तथा इन सब त्रासद स्थितियों के बीच कहाँ छुपा हुआ है सत्य ? और किसे कहते हैं सौन्दर्य ?

भारतीय जनमानस के बीच पसरी खाइयों, साम्प्रदायिक मूल्यों, जातीयता, शोषण, उत्पीडन, दमन के खिलाफ संघर्षित आज के युवा साहित्यकार को नपुंसक और छद्म आक्रोश से सिक्त मानने वाले ऐसे कथित बुद्धिजीवी या साहित्यकार उस कुंठित और विकृत मानसिकता के द्योतक है, जो साहित्य के नाम पर या तो नंगी जाघों के इतिहास में भटकते रहना चाहती है या समाज में बिखरे चुटकलों को 'बेताल' कथायें के रुप में बांधकर मानवीय-आत्मा को प्रेतआत्मा बना देना चाहती है। साहित्य के गढ़वाले ऐसे साहित्यकारों के गढ़ों को आज तोड़े जाने की नितांत आवश्यकता है।



Scanned by CamScanner

# महत्वपूर्ण यह नहीं कि हम कविता लिख रहे हैं ?............

(श्री मोहन स्वरूप से, श्याम बेबस की बातचीत)

श्री मोहन स्वरुप जी से मेरा प्रथम परिचय एक काव्य गोष्ठी में हुआ था। उस गोष्ठी में मेरी रचना की प्रशंसा करते हुए, उन्होंने मुझसे मिलते रहने को कहा था। इस घटना के लगभग एक साल बाद जब उनसे संयोगवश भेंट हुई तो मुझे लगा कि श्री मोहन स्वरुप एक प्रशासनिक अधिकारी के साथ-साथ एक अच्छे कवि भी हैं। उनकी कविताओं में निर्बल और असहाय वर्ग के प्रति सच्ची तड़प और गलत मूल्यों के प्रति तीखा विरोध मैंने स्पष्ट महसूस किया। शायद यही सबसे बड़ा कारण रहा कि मैं श्री मोहन स्वरुप के कवि—व्यक्तित्व के प्रति निकट होता चला गया। इसी रचनात्मक–निकटता ने कविता पोस्टर प्रदर्शनी जैसी योजना को जन्म दिया।

श्री मोहन स्वरुप
अपर जिला अधिकारी
(वित्त एवं राजस्व अलीगढ़)

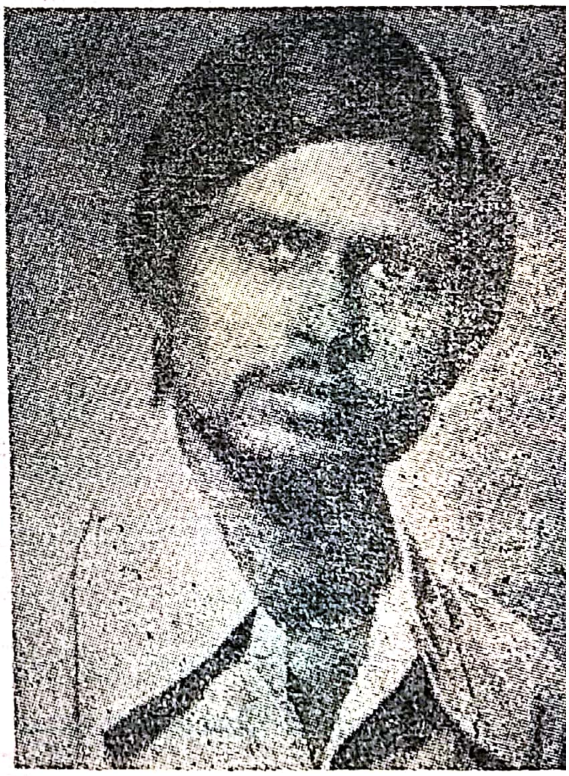

श्री श्याम बेबस
मनोरंजन कर निरीक्षक
बुलन्दशहर

'कविता पोस्टर प्रदर्शनी' का अवलोकन कर श्री श्याम बेबस ने श्री मोहन स्वरूप से उक्त प्रदर्शनी के संदर्भ में सारगर्भित बातचीत की। श्री श्याम बेबस का नाम साहित्य-जगत के लिये कोई अछूता व नया नाम नहीं है। स्तरीय और स्थापित विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से पाठकों को उनका साहित्यिक परिचय मिलता रहा है। कम उम्र में बिरले साहित्यकारों को ही इतनी ख्याति मिलती है, जितनी कि श्री श्याम बेबस ने अर्जित की है। कुछ समय पूर्व ही उनका गजल संग्रह 'महलों में कैद रोशनी' प्रकाशित हुआ है।

श्री श्याम बेबस और मैं विद्यार्थी जीवन से लेकर अब तक साथ-साथ ही साहित्य सृजन में जुटे रहे। श्री श्याम बेबस के अन्दर छुपे कवि को निकट से देखने, परखने, महसूस करने का अवसर जितना मुझे मिला है, शायद ही किसी को मिला हो। वे जितने अच्छे और ईमानदार कवि हैं उतने ही अच्छे मेरे मित्र भी।

प्रस्तुत है श्री मोहन स्वरुप से श्री श्याम बेबस की साहित्य और समाज के विभिन्न पक्षों पर एक सार्थक बातचीत :— —संपादक

श्याम बेबस— आपने कुछ दिन पूर्व अलीगढ़ जिला एवं उद्योग प्रदर्शनी में एक कविता-पोस्टर प्रदर्शनी का आयोजन किया था। आपके संरक्षण में निश्चित रूप से यह एक अद्वितीय प्रदर्शनी थी। उक्त प्रदर्शनी के मौलिक एवं अनूठे प्रयोग से, मैं इतना प्रभावित हुआ कि इस आयोजन की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि पर, आपके कवि-व्यक्तित्व का साक्षात्कार लेने, आपके पास चला आया। क्या आप उक्त प्रदर्शनी के बारे में कुछ प्रकाश डालना चाहेंगे ?

मोहन स्वरूप—क्या पूछना चाहते हैं आप ?

श्याम बेबस— यही कि उक्त प्रदर्शनी के आयोजन का बिचार आपके मन में किस प्रकार आया ?

मोहन स्वरूप—राष्ट्रीय एकता की समस्या मुझको आज से नहीं, कई बर्षों से उद्वेलित करती रही है। अलीगढ़ जनपद में नियुक्ति के पश्चात, कुछ बुद्धिजीवी नवयुवकों के सम्पर्क में आने पर, सामूहिक रूप से इस समस्या पर विचार करने का अवसर प्राप्त हुआ। हम-सभी इसी विचारधारा के थे कि कोई ऐसा प्रयास किया जाना चाहिए—कि जिससे जन-मानस की विचारधारा में मौलिक परि-

बर्तन आए इस दिशा में सर्व प्रथम सुझाव श्री रमेशराज, अध्यक्ष राष्ट्रीय एकीकरण परिषद (अलीगढ़ इकाई) द्वारा दिया गया। मैं रमेशराज एवम् उनके सहयोगी मित्र, रामगोपाल शर्मा, अनिल अनल, ब्रह्मदेव शर्मा आदि के इस सुझाव से पूरी तरह सहमत था कि कविता व चित्र दो ऐसे माध्यम हैं, जिनके द्वारा कही गयीं बातें दर्शकों के दिमाग पर ही नहीं, हृदय की भावनाओं पर भी छाप छोड़े, उक्त प्रकार की प्रक्रिया का प्रभाव अस्थायी न होकर दीर्घकालीन रहेगा।

श्याम बेबस– उक्त प्रदर्शनी के लिए आपने इतने अच्छे, राष्ट्रीय भावना को प्रेरणा देने वाले तथा वर्तमान परिवेश की सच्चाइयों के उजागर करने वाले चित्रों की व्यवस्था कैसे और कहाँ से की ?

मोहन स्वरूप–इस कार्य हेतु राष्ट्रीय एकीकरण परिषद के मुख्य पदाधिकारियों द्वारा विभिन्न विद्यालयों में कविताओं की पंक्तियां देकर, उन पर छात्र-छात्राओं द्वारा भाव-चित्र तैयार कराये गये। जिसके लिए सुश्री शैफाली भटनागर (कला विभाग–टीकाराम विद्यालय) एव श्री इजहार नज्मी (कला विभाग-ए० एम० यू०) का कलात्मक एवं श्री सुहैल अख्तर, मौ० मुख्तार आदि का रचनात्मक सहयोग हमें प्राप्त हुआ।

श्याम बेबस– इस योजना को साकार रूप देने में आपको कौन-कौन-सी समस्याओं का सामना करना पड़ा ?

मोहन स्वरूप–समस्याएं तो ढेर सारी रहीं। लेकिन चूँकि हम सब राष्ट्रहित के कार्य के प्रति सर्मपित भाव से जुड़े हुए थे, इसलिए चाहे आर्थिक समस्याएं हों या अन्य, हमें समस्याएं, समस्याएं नहीं लगीं। इसके लिए हम अपने माननीय जिलाधिकारी एवं प्रदर्शनी से सबंद्ध अन्य अधिकारियों के भी आभारी हैं, जिन्होंने शिविर हेतु स्थान उपलब्ध कराकर, इसकी व्यवस्था में सहयोग दिया।

श्याम बेवस– अब कुछ बातें आपके कवि—व्यक्तित्व के बारे में पूछना चाहूँगा।

मोहन स्वरूप–थोड़ा मुस्कराते हुए-हां हां··· पूछें आप।

श्याम बेबस– कविता मानव का वह रागात्मक तत्व है, जिसके बिना किसी भी सुसंस्कृति की कलपना असम्भव है। कविता जैसा साँस्कृतिक मूल्य आपकी आत्म-अभिव्यक्ति का साधन किस प्रकार और क्यों बना ?



Scanned by CamScanner

मोहन स्वरूप–जब मैंने किशोरावस्था में कदम रखा तो मेरे मन व मस्तिष्क में भी अन्य युवाओं की तरह एक आदर्श––समाज व व्यवस्था की कल्पना थी लेकिन जब जीवन की वास्तविकताओं से वास्ता पड़ा तो मुझे समाज व व्यवस्था में ऐसी कई कमियां नजर आयीं जिन्होंने भावनात्मक और वैचारिक स्तर पर, मुझे पूरी तरह उद्वेलित कर डाला। इसी उद्वेलन के परिणाम-स्वरूप मैंने विचारों और भावों की अभिव्यक्ति कविता के माध्यम से प्रारम्भ की।

श्याम बेबस– अभी आपने कहा था कि प्रत्येक युवा के कुछ आदर्शवादी मूल्य होते हैं। वे आदर्शवादी मूल्य क्या हैं और आप कैसी आदर्शवादी व्यवस्था की कल्पना करते हैं?

मोहन स्वरूप–मेरा आदर्शवादी व्यवस्था से तात्पर्य-उस व्यवस्था से है, जिसमें किसी व्यक्ति–विशेष का महत्व उसके धर्म, जाति अथवा पारिवारिक सम्बन्धों के आधार पर न होकर उसके गुणों व उपलब्धियों के आधार पर होना चाहिए। साथ ही उपेक्षित वर्ग के प्रति न्याय व्यवस्था मात्र कागजी या कानूनी किताबों में ही कैद न हो, बल्कि वास्तविक व प्रभावी रुप से जन-जन के बीच उपलब्ध करायी जानी चाहिए।

श्याब बेबस– आप स्वयं एक प्रशासनिक व न्याय व्यवस्था से जुड़े हुए हैं। जब आपको लगता है कि जनता को वास्तविक रूप में न्याय नहीं मिल रहा हैं, तब आपके भीतर का कवि कैसा अनुभव करता है?

मोहन स्वरुप–प्रशासनिक तंत्र का अंग होने के कारण, बहुधा ही ऐसे क्षण आते हैं, जब कि जन सामान्य पर अन्याय होता स्पष्ट दिखाई देता है। तब मेरे भीतर का कवि असंतोष व गहरे दुःख में डूबता चला जाता है। कभी-कभी यह क्षण इतने तीखे और कड़वाहट से भरे हुए हो जाते हैं कि पूछो मत।

श्याम बेबस– क्या कविता आपके ऐसे ही त्रासद क्षणों का प्रसव है?

मोहन स्वरूप–निस्संदेह।

श्याम बेबस– कविता के प्रसवोपरान्त क्या आपको किसी प्रकार की आत्म-संतुष्टि मिलती है।

मोहन स्वरुप–बड़ा अच्छा प्रश्न पूछा है आपने। दरअस्ल मेरे लिए कविता ही ऐसा सार्थक और सशक्त माध्यम है, जिसके द्वारा मैं जन-जीवन को निकट से भोगता व अनुभव करता हूँ। इसलिए कविता के



Scanned by CamScanner

प्रसवोपरान्त मुझे आत्मसंतुष्टि न मिले, ऐसा हो ही नहीं सकता ।

**श्याम बेबस**–आपकी अधिकांश कविताएं कोरे सौन्दर्यात्मक या कथित रागात्मक मूल्यों के स्थान पर, वर्तमान विसंगतियों, विकृतियों की ओर संकेत करती हैं । क्या आप शृंगारपरक साहित्य के प्रति अरूचि रखते हैं ?

**मोहन स्वरूप**–आप इस वास्तविकता से सहमत होंगे कि साहित्य (विशेषकर कविता) पर देशकाल एवं परिस्थितयों का सदैव से प्रभाव पड़ता आया है और आगे भी पड़ेगा । कुछ समय पूर्व कविता का अर्थ कोरे माँसल सौन्दर्य या महज तुकबन्दी से लिया जाता था । उक्त प्रकार की कविताओं के माध्यम से पाठक या श्रोता को रस और आनंद की प्राप्ति तो होती थी, लेकिन सामाजिक पीड़ाओं की अभिव्यक्ति का संकट ऐसी कविताओं में हमेशा बना रहा । इसी कारण पूरे समाज को सांस्कृतिक—उत्थान के लिए कोई विषेश संदेश नहीं मिल सका । इससे मेरा यह मंतव्य किंचित नहीं है कि रस प्रधान व छन्द बद्ध कविताएँ, कविताएँ नहीं हैं । इनका भी हमारे जीवन में मूल्य व महत्व है । इस संदर्भ में, इतना ही कहूंगा कि आज के समय की माँग की पूर्ति मात्र रस-प्रधान व छन्द बद्ध कविताओं से ही नहीं की जा सकती ।

श्याम बेवस– आप सिर्फ मुक्त छंद कविताएं ही लिखते हैं ऐसा क्यों ?

मोहन स्वरूप–मैं कविता को छन्द या रस जैसे कथित बन्धनों में बांधने का पक्षघर नहीं हूं । कविता को कवि की भावना एवं विचारों की मुक्त व स्वच्छंद अभिव्यक्ति होना चाहिए । क्योंकि महत्वपूर्ण यह नहीं है कि हम कविता लिख रहे है, महत्वपूर्ण यह है कि हम कविता किसके लिए लिख रहे हैं ? और वह उस तक कितनी संप्रेषित या प्रभाव डाल रही है ।

श्याम बेबस– हमारा समाज आज भी रूढ़ि, जातीयता, साम्प्रदायिकता, धार्मिक-उन्माद जैसे अमानवीय मूल्यों से ग्रस्त है । क्या आपको इस खोखले सामाजिक ढाँचे में किसी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावनाएँ परिलक्षित होती हैं ?

मोहन स्वरूप–एक और सार्थक सवाल उठाया है आपने । सच बात तो यह है कि जिस प्रकार का सामाजिक ढाँचा आज हमें देखने को मिल



Scanned by CamScanner

रहा है, इसमें मूलभूत परिवर्तन किये जाने नितांत आवश्यक हैं, लेकिन निकट-भविष्य में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सम्भावना नजर नहीं आती । कभी-कभी तो ऐसा आभास होता है कि हमारा पूरा समाज दिशाहीन हो चला है । दुःख का विषय तो यह है कि अधिकांश कथित दिशा-निर्देशक, वर्ग जाति, धर्म या सम्प्रदाय विशेष के दायरे में ही दिशा निर्देशन की बात कर रहे हैं । पूरे के पूरे सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन लाने वाला कोई भी दिखाई नहीं देता ।

श्याम बेबस– क्या बुद्धिजीवी और साहित्कार भी नहीं ?

मोहन स्वरूप–भाई रोना तो यही है कि इस देश के बुद्धिजीवियों को अपने कर्तव्य का बोध ही नहीं है । या तो वे स्वयं बँटवारे की राजनीति में फँसकर रह गए हैं । या किसी प्रकार यदि उन्होंने अपनी भावनाओं और चरित्र को जीवित रखा है तो किसी कोने में छिपकर बैठ गये हैं । ऐसे बुद्धिजीबिओं में आगे आने का साहस लगातार क्षीण होता जा रहा है । पलायम-वादिता उन पर हावी हो रही है । तथा जो बुद्धिजीवी आगे आ रहे हैं उनमें समाजोपयोगी विचारों, त्याग, वलिदान की भावनाओं का नितांत अभाव है । लेकिन इसका यह अर्थ कदापि नही है कि मुझे देशभर की निराशाजनक स्थिति प्रस्तुत करनी है । यदि हम तुलना करें तो पिछले ३०-३५ वर्षों के इतिहास से पाएँगे कि आज के नवयुवकों की विचारधाराओं में पिछली पीढ़ी के व्यक्तियों की विचारधारा से पर्याप्त और सार्थक अन्तर आया है, परन्तु प्रगति की गति धीमी अवश्य है ।

श्याम बेबस– ऐसे वे कौन से कारण हैं, जिनके बीच हमारी राष्ट्रीय चरित्र के प्रति आस्था क्षीण होती जा रही हैं । हम सब भारतवासियों का चरित्र घोर वैयक्तिक तथा अवसरवादी क्यों बनता जा रहा है ?

मोहन स्वरूप–मेरे विचार से स्वतंत्रता संग्राम के समय व इसके १०-१५ वर्षों बाद तक राजनीतिक नेताओं व सामाजिक कार्यकर्ताओं का जो नैतिक स्तर रहा था उसमें निश्चित रूप से गिरावट आई है । प्राप्ति के उपरान्त हम भारतवासियों ने स्वतंत्रता का अर्थ लूट खसोट, अराजकता, अवैध तरीकों से धन प्राप्त करने की स्वतंन्त्रता से ही लगाया । परिणाम यह हुआ कि अधिकांश लोगों ने कम से कम समय में (शॉर्टकट मैथड़ से) अधिक से



Scanned by CamScanner

अधिक पाना चाहा। इस अन्धी दौड़ में अनैतिक अवैधानिक मार्गों को अपनाने वाले आगे बढ़ गए और सीधे रास्ते पर चलने वाले पीछे छूट गए। गलत मूल्यों का सहारा लेकर कथित प्रगति करते हुए लोगों को देखकर अन्य लोगों ने भी इसी मार्ग पर चलना उचित समझा।

दूसरा कारण वास्तविक स्वतंत्रता—प्राप्ति की राजनीति में प्रवेश करने के लिए बहुत से त्याग करने पड़ते थे। उस समय वे ही लोग राजनीतिक में प्रवेश करते थे, जिनको राष्ट्र के प्रति असीम लगाव व मानव-मूल्यों में, वास्तव में आस्था थी। जैसे जैसे समय गुजरा है, राजनीति किसी उच्च पद की प्राप्ति का साधन बन गयी है। अब राष्ट्र व समाज की सेवा इस सीमा तक गौण हो गयी है, कि दिखती भी नहीं।

श्याम बेबस– आप अपनी प्रशासनिक सेवाओं में रह कर एक गलत और भ्रष्ट व्यवस्था के बीच अपने कवि जैसे ईमानदार व्यक्तित्व को क्या सुरक्षित रख पाते हैं? या एक प्रशासनिक अधिकारी इस व्यक्तित्व की हत्या कर डालता है?

मोहन स्वरूप–मेरा ईमानदारी से यही प्रयास रहता है कि मेरा जो भी मूल-भूत व्यक्तित्व है वह कभी भी न दबने पाए या आत्महन्ता न बने। इसमें कोई संदेह नहीं कि इसमें सफलता प्राप्त करने के लिए मुझे अत्यधिक जागरूक व संघर्षशील रहना पड़ता है। मेरा हर समय यही प्रयास रहता है कि मेरे भीतर का कवि जिस रूप में भी हो वह जीवित रहे। बहुधा मेरे प्रशासनिक व्यक्तित्व एवम् मेरे अन्दर के कवि में प्रतिद्वन्दिता शुरू हो जाती है, पर समझौता उसी सीमा तक करता हूँ, जहाँ तक किसी के साथ कोई अन्याय न हो एवम् मेरे अन्दर का कवि धिक्कारे नहीं। पर यह सत्य है कि कभी न कभी समझौते करने पड़ते हैं।

श्याम बेबस– अब तक आखरी प्रश्न-क्या भविष्य में भी आप कविता पोस्टर प्रदर्शनी जैसे सांस्कृतिक आयोजन करते रहना चाहेंगे?

मोहन स्वरूप–बेशक! मैं इस जनपद के अतिरिक्त जिस जनपद में भी रहूँगा मेरी कोशिश यही रहेगी कि इस तरह के सांस्कृतिक आयोजन होते रहें।



Scanned by CamScanner

परिषद द्वारा लगाये गयी इस उद्देश्य पूर्ण चित्र-प्रदर्शनी के माध्यम से समाज में राष्ट्रीय एकता, आपसी सद्भावना एवं परस्पर मैत्री की भावना को जागृत करने का अनुकरणीय प्रयास किया गया है। आम जनता इस प्रदर्शनी को देखने के पश्चात्, साम्प्रदायिक कटुता एवं द्वेषभाव से होने वाली राष्ट्रीय एवं सामाजिक हानियों से परिचित होकर देश में सद्भावना का माहौल बनाने में योगदान प्रदान करेगी।

दैनिक आज (आगरा) ८ फरवरी १९८७ ई०

× × ×

चित्र प्रदर्शनी में सभी कला कृतियां कवियों की कविताओं के साथ जैसे बोलती प्रतीत होती हैं। अस्तु-

हम नहीं हिन्दू-मुसलमाँ, हम नहीं शेखो-बिरहमन
हम नहीं काजी पुरोहित, हम नहीं रामो-रहीमन
भेद से आगे खडे हम, फर्क में अन्जान हैं हम
प्यार है मजहब हमारा, और बस इन्सान हैं हम

× × ×

विश्व से शोषण मिटे अब, यह हमारी माँग है
युद्ध का खतरा हटे अब, यह हमारी माँग है

× × ×

धर्म के नाम पर लाशों, को बिछाने वालो।
धर्म इन्सान से बड़ा नहीं होता।

ब्रजेश टाइम्स (अलीगढ़) ८ फरवरी १९८७ ई०

तेवरीपक्ष-8



Scanned by CamScanner

क्या आप जानना चाहते हैं ?

△ काव्य के सम्बन्ध में रस की व्याख्या विभाव, संचारी भाव, अनुभाव और स्थायी भावों को लेकर की गयी है ?

△ लेकिन यह भाव आखिर हैं क्या ?

△ काव्य का भावात्मक विकास कैसे और क्यों हुआ ?

△ क्या भाव किसी विशेष प्रकार की ऊर्जा के द्योतक हैं ?

△ क्या किसी भी प्रकार के भावात्मक विकास में किसी वैचारिक प्रक्रिया का योगदान होता है ? यदि होता है तो विचार अपनी किस प्रकार से भूमिका निभाते हैं ?

△ विभाव कहीं वैचारिक प्रक्रिया का रूप तो नहीं हैं ?

△ काव्य या सामाजिक में स्थायित्व विचारों का होता है अथवा भावों का ?

△ भाव से पहले वैचारिक प्रक्रिया प्रारम्भ होती है या बाद में ?

△ प्रगतिशील, यथार्थवादी काव्य में किस प्रकार के और कौन-से भाव होते हैं, जिनके उद्‌बुद्ध होने पर किसी सामाजिक में किस प्रकार के रस की निष्पत्ति होती है ?

ऐसे ही ढेर सारे प्रश्नों के उत्तर देने के लिये, एक अनूठी, अद्वितीय, पुस्तक –

# कविता क्या है ?

(शीघ्र प्रकाश्य)

मूल्य–६० रुपये

लेखक–रमेशराज

जिसमें आप पायेंगे—

△ काव्य का विचारों के आधार पर रसात्मक विवेचन।

△ अनुभूति, आस्वादन, साधारणीकरण, औचित्य, ध्वनि, अलंकार आदि के प्रति मनोवैज्ञानिक विश्लेषण

सार्थक–सृजन प्रकाशन, १५/१०९, ईसा नगर, अलीगढ़।


Scanned by CamScanner

# हमारी कुछ सार्थक कृतियाँ

(१) अभी जुबाँ कटी नहीं, (तेवरी संग्रह), सं०–रमेशराज
मूल्य–पाँच रुपये

(२) कबीर जिन्दा है, (तेवरी संग्रह), सं०–रमेशराज
मूल्य–सजिल्द बीस रुपये

(३) इतिहास घायल है, (तेवरी संग्रह), सं०–रमेशराज
मूल्य–पांच रुपये

(४) एक प्रहार : लगातार, (तेवरी संग्रह), कवि–दर्शन बेजार, सं–रमेशराज
मूल्य–पांच रुपये

(५) तेवरी-पक्ष (त्रैमासिक) स०–रमेशराज
वार्षिक मूल्य–दस रुपये, एक प्रति–तीन रु०

## शीघ्र प्रकाश्य–

(६) कविता क्या है ? लेखक–रमेशराज
मूल्य–साठ रुपये

(७) दीदी ! तुम नदी हो, (कविता संग्रह) कवि–रमेशराज
मूल्य–बीस रुपये

(८) प्रेम न जानें श्याम, (तेवरी-शतक) कवि–रमेशराज मूल्य–बीस रुपये

सार्थक–सृजन प्रकाशन, १५/१०६, ईसा नगर, अलीगढ़ ।

बुक-पोस्ट/मुद्रित सामग्री

सेवामें,

श्री......................................................

......................................................

......................................................

संपादक/मुद्रक/प्रकाशक : रमेशराज ने शारदा प्रिन्टर्स, 'राठी भवन' सासनी गेट अलीगढ़ में छपवाकर, १५१/०६, ईसा नगर, अलीगढ़ से प्रकाशित किया ।

Scanned by CamScanner